चन्दामामा
जुलाई १९७०
75
P

जुलाई १९७०

विषय - सूची

*

एक प्रति ०-७५ पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ९-००
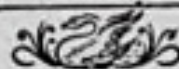
GRAMS: "CHANDAMAMA"

ESTD. 1947

PHONE. 444851—6 LINES

CHANDAMAMA PUBLICATIONS

(Prop.: SARADA BINDING WORKS)

2 & 3, ARCOT ROAD :: VADAPALANI :: MADRAS-26

प्रिय पाठको,

हमने पिछले मास में कहा था कि 'अंग्रेजी चन्दामामा' इस मास में प्रकाशित हो जायगी। अब बिक्री के लिए तैयार है! सब कोई इसे पढ़कर तारीफ़ के पुल बांध रहे हैं। सुंदर और सरल अंग्रेजी में दस कहानियाँ आप को आनंद प्रदान करेंगी। आप का मनोरंजन भी करेंगी।

आज ही एक प्रति खरीद लीजिये। अंग्रेजी चन्दामामा केवल ७५ पैसे मात्र है। यह पत्रिका आप को जहाँ अनुपम मनोरंजन प्रदान करेगी वहाँ आपकी अंग्रेज़ी की वृद्धि करने में भी सहायकारी सिद्ध होगी।

प्रकाशक

आनंद
अपना वजीफा
खोते-खोते बचा!

परीक्षा के दिन...
आनंद, प्रश्नों के उत्तर ठीक से लिखना। याद रखना कि तुम्हें अपना वजीफा कायम रखना है।

परीक्षा हाल में...
अहाऽ हा! पर्चा कितना आसान है!

एक घंटे बाद...
समझ में नहीं आता कि मेरी पेन बंद क्यों पड़ गयी।

मैं समय पर अपना पर्चा कैसे पूरा कर सकता हूँ?

फिक्र मत करो आनंद, यह लो कैम्लिन पेन और कैमल इंक और लिखना शुरू करो।

ओह! यह स्याही कितनी अच्छी है। यह चटकीली भी दिखती है। अब मैं समय पर पर्चा पूरा कर लूंगा।

आनंद ने समय पर पर्चा पूरा कर लिया।

जिस दिन परिणाम निकला...
बधाई!
तुमने कमाल कर दिया
बधाई!

याद रखिये, कैमल इंक और कैम्लिन पेन सरलता से चलती हैं। हमेशा कैमल ही लीजिये।
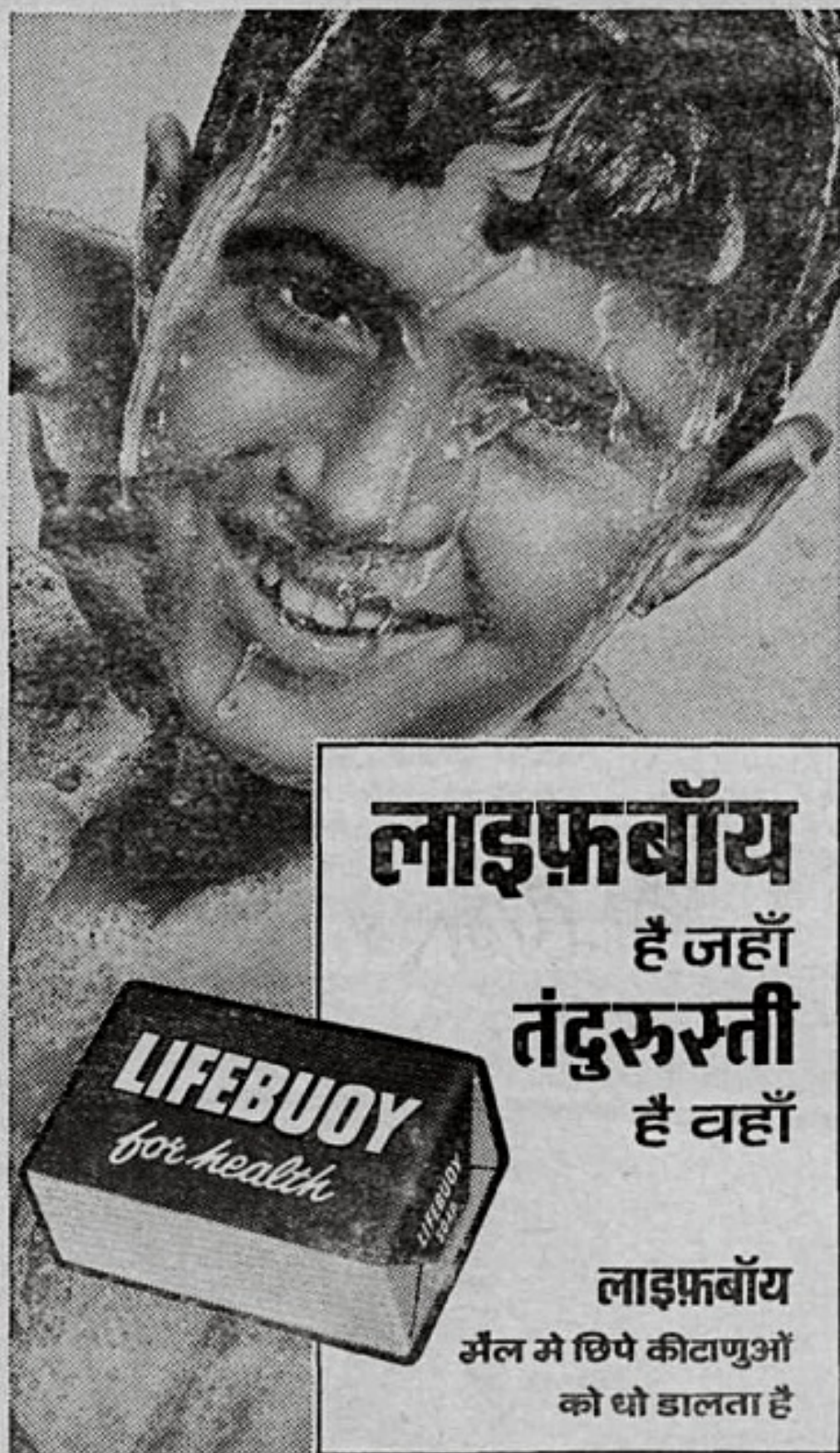
लाइफ़बॉय
है जहाँ
तंदुरुस्ती
है वहाँ
LIFEBUOY
for health
लाइफ़बॉय
मैल मे छिपे कीटाणुओं
को धो डालता है
हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन
लिंटास-L. 60-77 HI

FOR PRECISION IN...

BNK
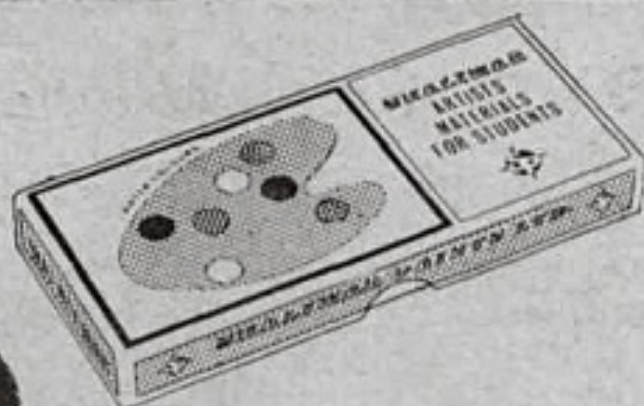
बिन्नी केसमेन्ट :
आकर्षक स्कूली पोशाक के लिये जो खेल के मैदान में भी लाजवाब है !
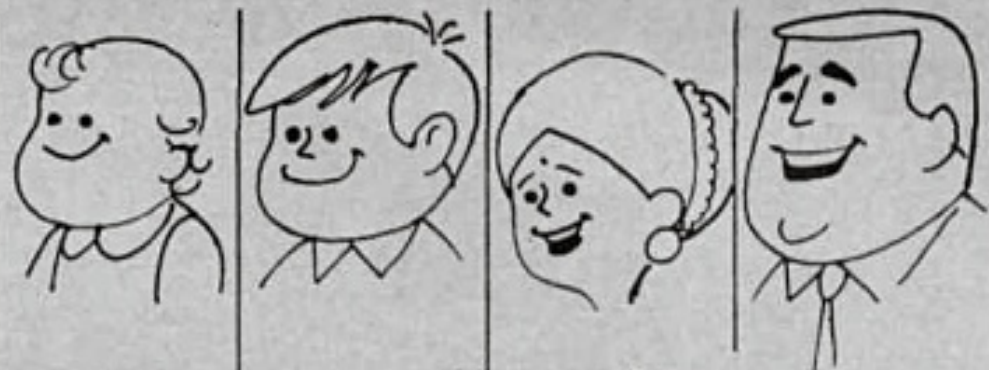
टूथब्रशों की एकमात्र शृंखला खास आपके लिए

आपके दांतों के लिए...
आपके मसूड़ों के लिए...
आपका मनचाहा...
आपकी उम्र
के हिसाब से...
हर उम्र और
हर पसन्द के लिए
बिनाका टूथब्रश!

बिनाका टूथब्रश के बालों की गोल बनाई गई नोकें आपके मसूड़ों को छिलने से बचाती हैं।

बिनाका टूथब्रश सिर्फ टूथब्रश ही नहीं कुछ और भी है

Binaca®

ULKA : CTB-66 HIN

चन्दामामा

संचालक: **चक्रपाणी**

इस अंक में 'तीन रानियाँ' नामक जो बेताल कथा प्रकाशित हुई है, उसके लेखक श्री मोहन राजेश हैं। मोहन राजेश की कहानी को हमने आवश्यक परिवर्तनों के साथ बेताल कथा का रूप दिया है। 'कुरूप राजकुमारी'; 'भगवान पर भरोसा' तथा 'दुख का मूल' इस अंक की अन्य सुंदर कहानियाँ हैं। 'लेनिन की कहानी' शीर्षक में हमने लेनिन के वैविध्यपूर्ण जीवन की अन्य प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है।

वर्ष : २१ जुलाई १९७० अंक : ११

भगवान पर भरोसा

पुराने जमाने में फ़ारस के एक गाँव में एक फ़कीर रहा करता था। वह अव्वल दर्जे का बेवकूफ़ और आलसी था। वह स्वस्थ था, काम करने की ताक़त रखता था, मगर काम चोर था। अपना पेट भरने के लिए वह भीख माँगा करता था। बाक़ी समय सोने या मटरगश्ती करने में बिता देता था। अगर कोई उसे डाँट बता देता कि सांड जैसे हो, मेहनत कर अपना पेट क्यों नहीं भरते? तो वह बिलकुल ध्यान न देता था।

धीरे धीरे गाँव में उसे भीख मिलना मुश्किल हो गया। एक जून पेट भरना भी नामुमक़िन था। वह यह सोचकर पड़ोसी गाँव के लिए रवाना हुआ कि अपने गाँव में जीना कठिन है।

फ़कीर गाँव से चल पड़ा। रास्ते में एक बड़ा जंगल पड़ा। वह जंगल से होकर जा ही रहा था कि एक जगह उसे एक लंगड़ा सियार दिखाई दिया। फ़कीर को बड़ा आश्चर्य हुआ।

'ओह! भगवान की यह कैसी महिमा है! बिना हाथ-पैरवाला यह सियार इस भयानक जंगल में कैसे जीता है? वह अपना खाना कैसे पाता है?'

फ़कीर ये बातें सोच ही रहा था कि एक शेर हिरण को मारकर उस ओर खींच लाया।

शेर को देखते ही फ़कीर डर गया और एक झाड़ी के पीछे छिप गया।

शेर अपनी भूख मिटाकर हिरण के बचे हुए माँस को वहीं छोड़ चला गया। उस माँस को लंगड़े सियार ने खाया और अपनी भूख मिटा ली।

फ़कीर को लगा कि आज उसे एक महान सत्य का परिचय मिल गया।

सुरेश खन्ना

समस्त प्राणियों का पोषण करनेवाले वही ईश्वर उस लंगड़े सियार को आवश्यक खाना समय पर पहुँचाकर उसकी रक्षा कर रहा है!

भगवान की इस कृपा पर फ़कीर के मन में अपार विश्वास पैदा हुआ।

"भगवान जिस प्रकार प्रति दिन इस लंगड़े सियार को उसका आहार दे रहा है, वैसे ही मुझे क्यों न देगा? मुझे घर-घर और द्वार-द्वार जाकर भीख माँगने की क्या ज़रूरत है? चाहे जो भी हो, आज से मैं किसी के पास जाकर याचना न करूँगा। भगवान पर ही भरोसा रखूँगा। सियार की तरह मैं भी किसी कोने में बैठा रहूँगा। मेरा खाना भगवान खुद मेरे पास भेज देगा।" यह सोच कर वह फ़कीर एक गाँव की ओर चल पड़ा।

फ़कीर पड़ोसी गाँव में गया। एक मसजिद के निकट जाकर झोली को एक पेड़ से बाँध दिया और वह उसके सामने खड़ा हो गया।

वहाँ पर एक बुजुर्ग आ पहुँचा। उसने फ़कीर से कहा—"यहाँ पर कोई भीख देनेवाला नहीं है। तुम गाँव में जाकर भीख माँग लो।"

"यहाँ मसजिद जो है! जहाँ घर है, वहाँ घरवाला भी होगा! इस मसजिद में रहनेवाला क्या मुझ पर दया न करेगा?" फ़कीर ने जवाब दिया।

बुजुर्ग ने खीझते हुए जवाब दिया– "यहाँ पर रहनेवाले कौन हैं? जानते भी हो? तुमको और मुझे प्राण देनेवाले और सभी प्राणियों का पोषण करनेवाले ईश्वर हैं! उनका परिहास न करो।"

"अरे, ईश्वर के घर के सामने याचना करके खाली हाथ कैसे जावे? मैं भीख लेकर ही यहाँ से हटूँगा।" ये शब्द कहते फ़कीर ने ईश्वर से बिनती की–"हे दीन रक्षक! तुम अपने अदृश्य भण्डार से मेरे एक दिन का खाना भिजवा दो।" इसके बाद फ़कीर वहीं पर बैठ गया।

फ़कीर उस गाँव के लिए नया था। इसलिए किसी ने भी उसका हाल जानने का प्रयत्न न किया। न किसीने उसे खाना दिया और न ही उसके सुख-दुखों का परिचय पाने की कोशिश की।

कुछ ही दिनों में फ़कीर खाने के अभाव में कमजोर हो गया। उसका सारा मांस गल गया। केवल हड्डियाँ और चमड़ा मात्र रह गया। फ़कीर का अंतिम समय निकट आया।

उस समय मसजिद के भीतरी भाग से ये शब्द सुनायी पड़े–"मूर्ख, क्या तुम हाथ-पैर न रखनेवाले लंगड़े सियार थोड़े ही हो? ताक़त रखते हुए भी जूठे दानों की आशा रखना नीच पूर्ण काम है। जो मेहनत करके दूसरों के सुख में हाथ बंटाता है, उस पर मैं अनुग्रह करता हूँ।"

ये बातें सुनकर फ़कीर शर्मिंदा हुआ। उसे ज्ञानोदय हुआ। अंतिम सांस के साथ वह मसजिद से बाहर आया और उस दिन से मेहनत करते हुए इज्जत की जिंदगी बिताने लगा!
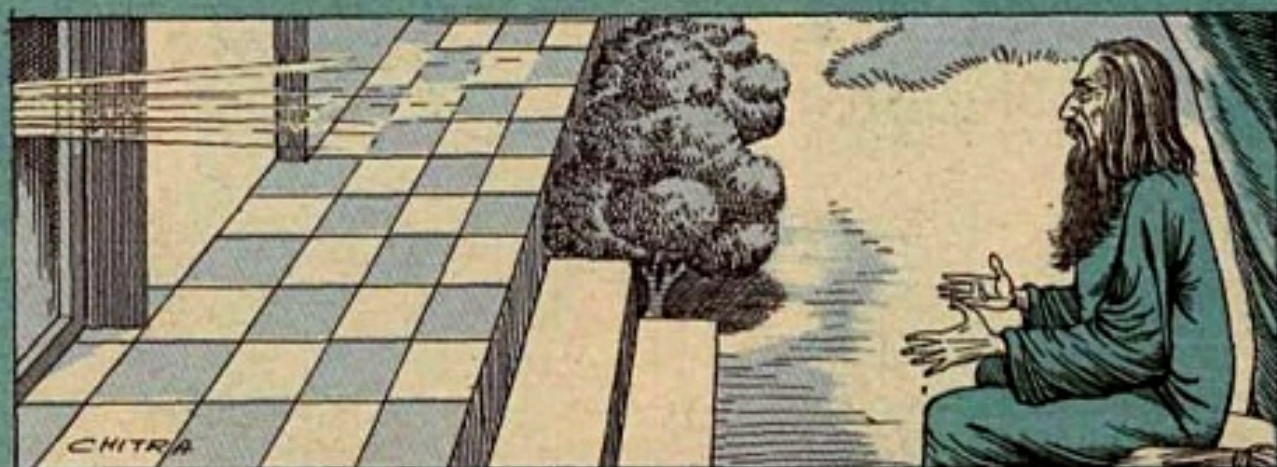
क्षुत क्षामोपि, जरा कृशोपि, शिथिल प्रायोपि, कष्टांदशां
मापन्नोपि, विपन्न दीधितिरपि, प्राणेषु नश्यत्स्यपि,
मत्तेभेन्द्र विभिन्नकुंभ पिशितग्रासैक बद्धस्पृहा:,
किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहता मग्रेसर: केसरी ।। १ ।।

(अत्यंत मान रखनेवाला सिंह भले ही भूख से व्याकुल हो, वृद्धावस्था में हो, कठिनाइयों में हो, दुर्बल हो, प्राण त्यागने की दशा में हो, फिर भी हाथी के कुंभस्थल को चीरकर खाना चाहेगा, मगर सूखी घास खाने की इच्छा रखेगा? अर्थात नहीं!)

लांगूलचालन मधश्चरणावघातं,
भूमौ निपत्य वदनोदर दर्शनं च,
श्वा पिंडदस्य कुरुते गजपुंग वस्तु
धीरं विलोकयति चाटु शतैश्च भुंक्ते ।। २ ।।

(कुत्ता खाना देनेवाले को देख पूंछ हिलाते जमीन पर औंधे मुँह गिरकर अपने मुँह और पेट दिखाता है! परंतु हाथी महावत के मुँह से मीठी-मीठी बातें कहलवाते हुए भी गंभीर रहता है।)

परिर्वितिनि संसारे मृत: को वा स जायते?
स जातो येन जातेन यानि वंशस्स मुन्नतिम् ।। ३ ।।

(जन्म व मृत्यु के परिवर्तन में मरनेवालों में कौन पुन: पैदा नहीं होता? जिसके कारण वंश का विकास और यश होता है, उसका जन्म ही धन्य है।)

प्रतिष्ठा के धनी

दुख का मूल

एक गाँव में राजहंस नामक एक युवक था। उसके माता-पिता, भाई-बंधु कोई न थे। अपने पिता की सारी कमाई अंधाधुंध खर्च करके वह जब कंगाल बना, तब वह पछताने लगा। वह यह सोचकर घर से चल पड़ा कि कहीं जाकर थोड़ा धन कमा ले और इज्जत की ज़िंदगी जीवे।

बड़ी दूर तक यात्रा करके राजहिंस थक गया। एक पेड़ के नीचे बैठकर सुस्ताने लगा। तभी उधर से एक अमीर आ निकला।

अमीर अच्छे वस्त्र और क़ीमती पगड़ी पहने हुए था। उसने राजहंस के पास आकर उसका हाल जाना और कहा–"तुम मेरे साथ घर चलो। मेरे ही घर रहो, अपने भाई की तरह तुम्हारी देखभाल करूँगा। तुम्हें किसी बात की कमी होने न दूंगा। मेरे घर के लोग हमेशा रोया करते हैं। तुम उसका कारण जानने की चेष्टा न करो।"

राजहंस ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया। उसने अमीर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और वह अमीर के साथ चल पड़ा।

अमीर का घर राजमहल जैसा था। घरवाले राजहंस को नौकर की तरह नहीं देखते थे। पर सबके चेहरों पर रोना छाया हुआ था। राजहंस के मन में उसका कारण जानने की इच्छा तो पैदा हुई, लेकिन उसने जबर्दस्ती अपनी इच्छा को रोक लिया।

हमेशा रोनेवालों में से जब-तब कोई न कोई मर जाता था। घर का मालिक उनकी अन्त्येंष्टि क्रियाएँ करवाता था।

एक दिन घर के मालिक ने राजहंस से कहा–"मैं तीर्थयात्रा पर जा रहा हूँ।

सुमित्रा कुमारी

कह नहीं सकता कि लौट आऊँगा कि नहीं। इसलिए तुम्हीं इस घर के मालिक बने रहो।"

"क्या अब ही सही, यह बता सकते हैं कि इस घर के लोग क्यों हमेशा रोते रहते हैं?" राजहंस ने पूछा।

"नहीं, मैं नहीं कहूँगा। उनके दुख का कारण जानने से तुम्हारा कोई फ़ायदा न होगा। दूसरी बात यह है कि तुम इस मकान के पूर्वी दर्वाज़े को कभी न खोलो। कभी उसे खोलकर बाहर जाओगे तो तुम्हें पछताना पड़ेगा।" मालिक ने उसे समझाया।

इस प्रकार मालिक राजहंस को चेतावनी देकर तीर्थयात्रा पर चल पड़ा। एक दिन राजहंस के मन में पूरब का दर्वाज़ा खोलने का कुतूहल हुआ। उस दर्वाज़े को खोलने पर एक कमरा दिखाई पड़ा। उसमें एक सुरंग था। वह उस सुरंग के ज़रिये चलकर समुद्र के किनारे जा पहुँचा।

वहाँ पर एक अति विशाल पक्षी बैठा था। वह उड़ आया। राजहंस को अपने पैरों में दबाये समुद्र को पार कर एक निर्जन टापू में उसे छोड़कर कहीं उड़ गया।

राजहंस समुद्र के किनारे खड़े हो जहाज़ का इंतज़ार करने लगा। थोड़ी देर बाद

खुश क़िस्मती से उधर से एक जहाज़ आ निकला। उसे खेनेवाली सब नारियाँ थीं। वे नारियाँ राजहंस को जहाज़ पर कहीं ले गयीं।

जहाज़ की मालिकिन राजहंस को राजमहल में ले गयी और बोली–"मैं इस देश की रानी हूँ। मैं अपने योग्य वर की खोज करते तुम्हारे वास्ते आयी थी। तुम मेरे साथ विवाह करके इस देश के राजा बनकर इसका शासन करो।"

"ऐसा ही करूँगा! मुझे बड़ी खुशी है।" इसके बाद राजहंस उस रानी से शादी कर सुखपूर्वक दिन बिताने लगा।

एक दिन वह अपनी पत्नी के साथ राजमहल में टहल रहा था। एक बंद दर्वाज़े के पास आकर उसने पूछा–"इस कमरे में क्या है?"

"कोई नहीं जानता कि उसमें क्या है! बड़ों की यह आज्ञा है कि इसे कभी खोलना नहीं चाहिये।" रानी ने उत्तर दिया।

एक दिन राजहंस ने मौक़ा पाकर अपनी पत्नी से छिपाकर उस दर्वाज़े को खोल दिया। उसमें एक सुरंग था। उस सुरंग में आगे बढ़ने पर समुद्र का किनारा आया। समुद्र के किनारे जब वह टहलने लगा तब एक विशाल पक्षी उसे उड़ा ले गया और पहले के मकान में उतार दिया।

राजहंस अपनी रानी की याद करते रोने लगा। उस वक़्त उसकी समझ में आया कि उस मकान में रहनेवाले सब क्यों रोते हैं?

तीर्थ यात्रा से लौटकर मालिक ने राजहंस में परिवर्तन देखा। उसने कहा–"तुम भी इन लोगों में मिल गये हो? तुम अपनी भलाई खुद नहीं जानते! इसलिए इसका फल भोगो।"
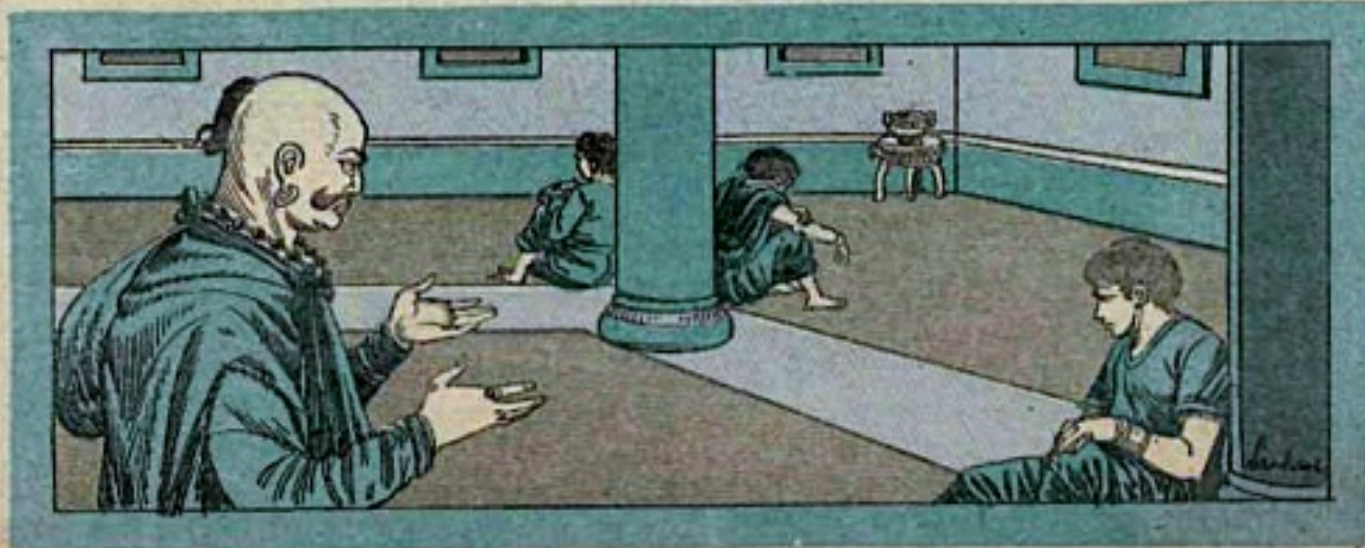
शिथिलालय

[३०]

[उन्मत्त कैथा खाने पर नांगसोम पागल हो चिल्लाने लगा। पुजारी ने उसे पकड़ लिया और शिथिलालय की खोज में चल पड़ा। पहाड़ पर शिखिमुखी वगैरह ने उसका सामना किया। उस समय जांगला घायल हुआ। शिथिलालय का पुजारी घाटी में गिर पड़ा। नांगसोम घाटी में कूद पड़ा। इसके बाद–]

नांगसोम 'शिथिलालय' 'शिथिलालय' पुकारते घाटी में कूद पड़ा। इस पर शिखिमुखी व विक्रमकेसरी दंग रह गये। गोलभरा से बड़ी कुशलता के साथ नाव चलाकर नांगसोम ने उन लोगों को इस वृच्छिक टापू में पहुँचा दिया था। यहाँ पहुँचने के बाद भी बड़ी हिम्मत के साथ उनकी मदद की थी। ऐसे विश्वासपात्र का उन्मत्त हो घाटी में कूदकर जान से हाथ धोना उन दोनों के लिए दुख की बात थी।

"शिखी, हम एक अपने बड़े मित्र को खोये हैं। उसने किस विश्वास के बल पर उस उन्मत्त कैथे को खाकर यह भयंकर आफ़त मोल ली है!" विक्रमकेसरी ने शिखी से पूछा।

शिखिमुखी उत्तर देने ही वाला था कि इतने में जांगला जोर से कराह उठा

और बोला—"शिखी साहब! नांगसोम मर न गया होगा! घाटी में कूदते समय वह किसी महावृक्ष में अटक गया होगा। वृक्ष की डालों ने उसकी रक्षा की होंगी। अलावा इसके उसने जब शिथिलालय देखने का उत्साह दिखाया तब वह घाटी में कूद पड़ा। हो सकता है कि इसमें सचाई भी हो।"

जांगला की बातों से शिखिमुखी के दिल में आशा की रेखा खिंच गयी। वह जांगला के निकट पहुँचा। बड़े ही स्नेह से उसके कंधे पर हाथ फेर कर बोला—"जांगला, तुम्हारी स्वामिभक्ति ही नहीं, तुम्हारी हिम्मत पर भी मैं मुग्ध हूँ! अगर तुमने न पकड़ा होता तो शिथिलालय का पुजारी इस बार भी हाथ से खिसक जाता।" इसके बाद जांगला के घाव पर खून को जमे देख चारों तरफ़ देखते बोला—"अरे, हम लोग भूल ही गये हैं। क्या घाव पर अब तक पट्टी नहीं बंधी गयी?"

वृच्छिक जाति का नेता झट पास की झाड़ियों में घुस पड़ा। किसी पत्ते का रस लाकर जांगला के घाव पर मल दिया और पट्टी बांध दी। उस वक़्त विक्रमकेसरी जांगला से बोला—"जांगला, तुम्हारे कहे मुताबिक़ नांगसोम ही नहीं, बल्कि शिथिलालय का पुजारी भी किसी पेड़ की डाल पर गिरकर जिंदा रह सकता है न?"

"जी हाँ, साहब! ऐसा हुआ तो इसमें आश्चर्य करने की कोई बात नहीं।" जांगला ने उत्तर दिया।

यह बात सुनते ही वृच्छिक नेता क्रोध से उछल पड़ा और बोला—"अगर ज़िंदा ही हो तो पूर्णिमा के दिन उन दोनों की वृच्छिक माता को बलि दूंगा। उनमें से एक धूर्त है। दूसरे ने उन्मत्त कैथा खाकर

वृच्छिक माता के प्रति बहुत बड़ा अपराध किया है।"

वृच्छिक नेता की बातें सुन विक्रमकेसरी क्रोध से पागल हो उठा। उसने झट तलवार खींच कर कहा-"तुम बराबर इस तरह बातें कह रहे हो, मानों तुम्हीं इस वृच्छिक टापू का राजा हो! हमारी बलि देना इतना आसान समझते हो? ज़रा मैं भी तुम्हारी ताक़त की जाँच कर लूं! तुममें हिम्मत हो तो हथियार लेकर सामने आ जाओ!"

विक्रमकेसरी की बातों से वृच्छिक जाति के लोगों में हलचल मच गयी। वे सब अपने नेता को घेरकर डींग हांकने लगे। पाँच-छे मिनट बाद वृच्छिक नेता अपने दल के लोगों को हटाकर पत्थर की कुल्हाड़ी उठा विक्रमकेसरी के निकट मत्त हाथी की तरह आ पहुँचा।

शिखी ने समझा कि अब बलि से बढ़कर भयंकर हत्या होने वाली है। यह बात सही है कि विक्रम के सामने वृच्छिकनेता किसी भी हालत में ठहर न सकेगा। तलवार की एक ही वार से वह वृच्छिक नेता के टुकड़े-टुकड़े कर सकता है!

शिखिमुखी ने उन दोनों को रोका। जांगला को साथ ले जाकर उन दोनों के बीच खड़ा हो गया और इम्युजाति की टूटी-फूटी बोली में कहा-"वृच्छिकनायक! तुम जल्दी न मचाओ। विक्रम की तलवार के सामने तुम्हारी पत्थर की कुल्हाड़ी किसी काम की नहीं। आखिर इस झगड़े का कोई मतलब भी तो हो! तुमने अब तक यह पता नहीं लगाया कि वृच्छिक माता का मंदिर कहाँ पर है? अलावा इसके हमें यह भी नहीं मालूम कि नांगसोम ज़िंदा है या नहीं। नाहक लड़ने से क्या फ़ायदा?"

तलवार तुम्हारी पत्थर की कुल्हाड़ी से पैनी है! मज़बूत भी है! तुम इससे बढ़कर अच्छा हथियार और ताक़त जिस दिन पा जाओगे, उस दिन हम शायद तुम्हारे गुलाम बन जायेंगे। तब तक तुम नाहक़ उछल-कूद न करो, समझें!"

शिखिमुखी की बातों का सार जांगला ने चार वाक्यों में वृच्छिकनेता को समझाया। विक्रम के हाथ से तलवार लेकर अपनी कलई पर टिका दी, तलवार के हटाते ही कलई से खून की बूंदें टपा-टप गिरने लगीं। उस खून को वृच्छिकनायक को दिखाते जांगला बोला—"तुमने जान लिया न कि तलवार की धार कैसी पैनी है! अब तुम शिखी साहब के कहे मुताबिक़ करने को तैयार हो जाओ। वरना तुम्हारी मौत निश्चित है!"

वृच्छिकनेता की आँखें लाल हो उठीं। वह एक बार गरज़ उठा। उसने अपने हाथ की पत्थर की कुल्हाड़ी दूर फेंक दी। छाती ठोंकते बोला—"धर्म युद्ध करेंगे। हथियार के विना खाली हाथों से लड़ेंगे! आ जाओ!"

तलवार फेंककर विक्रम वृच्छिकनायक से जूझने को तैयार हो गया। शिखी ने

जांगला ने शिखिमुखी की बातों को इम्भ्यु भाषा में वृच्छिकनायक को समझाया। वृच्छिकनायक क्रोध से गरजते बोला— "मैं कहता हूँ कि यह टापू मेरा है। यहाँ पर आये हुए सब लोग मेरे ही गुलाम हैं।"

विक्रमकेसरी गुस्से में पागल हो तलवार उठाने को हुआ, शिखिमुखी ने उसे रोक कर कहा—"कोई किसी का जान बूझकर गुलाम नहीं बन सकता। तुम यह साबित कर हमको अपने गुलाम बना सकते हो कि तुम हमसे ताक़तवर हो। मैं तुम्हारी भलाई के लिए कहता हूँ, देखो, यह

उसे रोकते हुए कहा-"इस वृच्छिक जाति के नायक से लड़ने का हक़ एक दूसरी जाति के नायक के पुत्र को है। इसके अनुचरों पर निगरानी रखे रहो।" ये शब्द कहते शिखिमुखी वृच्छिकनायक पर टूट पड़ा।

दोनों रोष से भरकर आपस में मुट्ठियों का प्रहार करते लड़ने लगे। वृच्छिक नायक शारीरिक बल में शिखिमुखी से मजबूत था, लेकिन शिखिमुखी की लड़ने की कुशलता और चालाकी वृच्छिकनायक में न थी। शिखी ने वृच्छिकनायक के सर व छाती पर ज़ोर से दे मारा, आखिर एक धक्के से उसे दूर गिरा दिया। उस पर सवार हो उसका गला दबाये दूसरे हाथ से उसके केश पकड़े। सर को एक दो बार खींच-खींच कर ज़मीन पर दे मारा।

वृच्छिकनायक की आँखें निकल सी आयीं। वह अपने दोनों हाथ जोड़कर नीरस कंठ से गुनगुनाने लगा। जांगला ने झुककर उसकी बातें सुनीं, तब शिखी से बोला-"शिखी साहब, इसे छोड़ दीजिये। यह बिनती करता है कि ज़िंदगी भर यह आप का गुलाम बना रहेगा।"

शिखिमुखी झट उछलकर उठ खड़ा हुआ। वृच्छिकनायक भी उठ बैठा। आगे झुककर शिखी के पैर पकड़कर गुनगुनाने लगा। अपने नेता को शिखी के पैरों पर पड़ते देख बाक़ी सभी लोग साष्टांग दण्डवत करने लगे।

शिखिमुखी वृच्छिकनेता को ऊपर उठाते हुए बोला-"एक आदमी का दूसरे का गुलाम बन जाना मुझे कतई पसंद नहीं है। जो हुआ, उसे हम भूल जायेंगे। आज से हम सब दोस्त हैं।"

वृच्छिकनायक की आँखों से आँसू झर उठे। उसने शिखीमुखी तथा विक्रमकेसरी

के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की और अपने अनुचरों से बोला–"आज से शिखी साहब हम सब के नेता हैं। उनकी हुकुम का पालन करना हमारा फ़र्ज़ है।"

इसके बाद सब ने पेड़ों के नीचे बैठकर खाना खाया। उस वक़्त शिखिमुखी ने विक्रमकेसरी से आगे के कार्यक्रम पर सलाह-मशविरा किया। उन दोनों का यह विश्वास था कि नांगसोम उस गहरी घाटी में किसी सुरक्षित जगह पर गिरकर बच रहा होगा। उस बातचीत को सुनकर जांगला ने बताया कि नांगसोम अगर ज़िंदा रहा तो शिथिलालय का पुजारी भी ज़िंदा होगा!

वृच्छिकनायक ने अपनी शंका एक बार और प्रकट की कि उन्मत्त कैथे का प्रभाव अद्‌भुत है। नांगसोम घाटी में कूदने के पहले 'शिथिलालय' का नाम लेते चिल्ला उठा था। यह उन्मत्तता की वजह से नहीं बल्कि उसे सचमुच शिथिलालय दिखाई दिया होगा।

"शिथिलालय की बात भगवान जाने! पहले हमें उस घाटी में जाकर उसे जिलाना होगा! जांगला के कहे मुताबिक़ शिथिलालय का पुजारी अगर पेड़ की डालों में फँसकर बच रहा हो तो उसे मार डालना होगा। अंधेरा होने के पहले ही हम उस घाटी में उतर जायेंगे।" शिखिमुखी ने सुझाया।

"आपकी जो आज्ञा, साहब! मगर यह घाटी भयंकर है। इसमें महा सर्प, वृच्छिक ही नहीं, बल्कि हाथी, सिंह, चीते..."

वृच्छिकनायक की बातों को काटते हुए शिखिमुखी ने कहा–"इस टापू में भयंकर प्रदेश नहीं तो और क्या हैं? तुम जिस वृच्छिक माता का मंदिर बताते हो, वह इसी घाटी में तो है। उस मंदिर का पता लगाकर उस माता की पूजा करने की ज़िम्मेदारी क्या तुम लोगों पर नहीं है?"

"हम उस माता को अपनी जान तक देने को तैयार हैं, साहब! अगर मैंने उन्मत्त कैथा खाया होता तो पूर्णिमा के दिन माता के मंदिर में जाकर मनुष्य की बलि देता। मनुष्य की बलि दिये बिना माता की कृपा न होगी।" वृच्छिकनेता ने कहा।

"अरे, बलि की बात बाद को देख लेंगे। पहले घाटी में तो उतरो।" शिखी ने कहा।

सब लोग पहाड़ पर से घाटी में उतरने लगे। वृच्छिक नेता आगे चलते रास्ता दिखा रहा था। उसके कहे अनुसार घाटी भयंकर थी। वहाँ के विशाल वृक्षों में अधिकांश जटाओं से भरे बरगद के पेड़ थे। उनके नीचे हाथी घूम रहे थे। कुछ पेड़ों के नीचे सिंह गर्जन कर रहे थे। वृक्षों की शाखाओं में महा सर्प लटक रहे थे। उनके तनों से छिपके बड़े-बड़े बिच्छू सरक रहे थे।

शिखिमुखी और उसके अनुचर हथियारों को तैयार रखकर चारों ओर चौकन्ने हो देखते हुए घाटी में उतर गये। नांगसोम जिस जगह कूद पड़ा था, उस ओर वृच्छिक नायक आगे बढ़ा। वह प्रदेश ऊँचे-ऊँचे वृक्षों तथा लताओं से घना था।

वृच्छिक नायक सर उठाये डालों की ओर देखते थोड़ी दूर चला, हठात रुककर पीछे आनेवाले शिखिमुखी से बोला– "साहब, इस वक्त हम उस जगह पहुँच गये हैं, जहाँ नांगसोम कूद पड़ा था। देखिये, उन डालों में कोई आकृति दिखाई देती है। लेकिन वहाँ पर पहुँचना खतरे से खाली नहीं। उसके नीचे हाथी का परिवार है।"

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने सर उठाकर उस ओर देखा। उन्हें भी पेड़ों की डालों में मनुष्य की आकृति अस्पष्ट दिखाई दी। वृच्छिक नायक ने शिखी से कहा–

"पहले यह जान ले कि वह नांगसोम की आकृति है या नहीं, तब हाथियों के झुंड को भगाया जा सकता है। नहीं तो हो सकता है कि पहाड़ पर से नीचे गिरा कोई भालू हो।"

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी इसी उधेड़बुन में शंका कर रहे थे कि लाल कुत्ता जोर से भूंक उठा। उसी दिशा में ध्यान से देखने पर शिखिमुखी को लगा कि वह आकृति नांगसोम की ही हो सकती है!

"विक्रम! पहले हमें हाथियों को पेड़ के नीचे से दूर भगाना है। इसके बाद हम में से कोई एक उस पेड़ पर चढ़कर देखेंगे कि वहाँ पर नांगसोम है या नहीं।" शिखी ने कहा।

इसी वक़्त दो भारी हाथी घींकार करते सूंड़ उठाकर उनकी ओर आने लगे। तब वृच्छिक नायक बोला–"सब लोग उन चट्टानों की ओट में भाग जाइये। वहाँ से चट्टानों को ढकेल कर हाथियों को भगाने की कोशिश करेंगे।"

यह चेतावनी पाकर सब लोग पहाड़ी चट्टानों के पीछे दौड़ गये। हाथी ज़ोर से कान फड़फड़ाते, सूंडों से ज़मीन पर प्रहार करते उनकी ओर झपट पड़े और चट्टानों के बीच की संकरीली जगह में घुस न सकने के कारण वापस लौट गये। मौक़ा पाकर शिखिमुखी के दल ने हाथियों पर चट्टानें लुढ़कवा दीं। हाथी सब घींकार करते दूर भाग खड़े हुए।

हाथियों के निकल जाने के बाद सब लोग पेड़ों के नीचे आये। वृच्छिक नायक ने अपने एक अनुचर को पेड़ पर चढ़ जाने का आदेश दिया। तभी लंगड़ा जांगला बैशाखी को पेड़ के तने से सटाकर बंदर की भांति जल्दी-जल्दी पेड़ पर चढ़ने लगा। (और है)

तीन रानियाँ

हठी विक्रमादित्य पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने यों कहा–"राजन, मैं नहीं जानता कि तुम किस पर विश्वास करके यह श्रम कर रहे हो। लेकिन उनकी विश्वासपात्रता का निर्णय करना तुम्हारा कर्तव्य है। नहीं तो, तुम भी मयंक देश के राजा सुजितवर्मा की भांति कठिनाइयों में फँस जाओगे। श्रम को भुलाने के लिए मैं तुमको उन रानियों की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: मयंक देश के राजकुमार का नाम सुजितवर्मा था। मयंक देश के राजा कई पीढ़ियों से प्रथगा की राजकुमारियों को अपनी पट्टमहिषि बनाते आ रहे थे। दोनों राज-वंश प्रतिष्ठित थे। इस कारण से प्रथगा राजकुमारी

बेताल कथाएँ

स्वयंवर मण्डप में प्रवेश करते ही सुजितवर्मा सौम्यलता को देख मोहित हो उठा। लेकिन सौम्यलता एक एक राजा को पार करते सुजितवर्मा को भी पारकर आगे बढ़ी। इसका कारण यह था कि इसके पूर्व ही उसने एक दूसरे राजकुमार से प्रेम किया था और उसके कंठ में जयमाला डालने का निश्चय कर लिया था।

पराक्रमी सुजितवर्मा ने यह अपमान की बात समझी कि सौम्यलता ने उसे वरण नहीं किया। झट उसने सौम्यलता का हाथ पकड़कर उसे रोका और दृढ़ स्वर में कहा–"मैं इस राजकुमारी को अपने साथ ले जा रहा हूँ। यदि किसी को आपत्ति हो तो वे मेरे साथ युद्ध कर सकते हैं।"

सुजितवर्मा से लड़ने को कोई तैयार न हुआ। लेकिन उसके प्रेमी एक युवक ने तलवार खींचकर कहा–"राजकुमारी की मान-रक्षा के लिए मैं तैयार हूँ। यदि मेरी मदद करने कोई आगे बढ़ना चाहते हैं, तो सामने आ जाइये।"

युवक की मदद करने कोई आगे न आया। उस युवक ने अकेले ही सुजितवर्मा से युद्धकर अपने प्राण दिये। इसके बाद सुजितवर्मा सौम्यलता को अपनी राजधानी

सौदामिनी देवी के युक्त वयस्का होते ही सुजितवर्मा के साथ उसका विवाह किया गया। उस वक़्त सुजितवर्मा चौदह साल का था। सौदामिनी देवी उम्र में उससे थोड़ी बड़ी थी।

सुजितवर्मा अपनी पच्चीस साल की उम्र में जब गद्दी पर बैठा, तब सौदामिनी देवी भी उसके साथ सिंहासन पर बैठकर उसकी पट्टमहिषि बनी। सुजितवर्मा के गद्दी पर बैठने के कुछ समय बाद विदर्भ राजकुमारी सौम्यलता का स्वयंवर हुआ। उस स्वयंवर में अनेक राजाओं के साथ सुजितवर्मा ने भी भाग लिया।

में ले गया और उसके साथ विवाह करके अपनी दूसरी रानी बना ली।

इस घटना के कुछ वर्ष बाद सुजितवर्मा जंगल में शिकार खेलने गया। वहाँ पर एक तड़ाग में स्नान करनेवाली एक जंगली कन्या को देखा। उसके अनुपम सौंदर्य पर मुग्ध हो उन्मत्त हो उठा और बलात्कार उसका मानभंग किया। यह बात मालूम होते ही सैंकड़ों जंगली युवक भाले, तलवार और लाठियाँ लेकर आये। उन सबने राजा को घेर लिया। राजा के अनुचर जंगली युवकों का सामना नहीं कर पाये।

सुजितवर्मा ने सोचा कि अपनी करनी का फल उसे भोगना होगा, यह समझकर उसने जंगली कन्या को अपनी तीसरी रानी बना ली। जंगली युवकों में दिल खोलकर इनाम बाँटे और उनसे मैत्री की।

सुजितवर्मा अपनी तीनों रानियों के साथ सुखपूर्वक दिन बिताने लगा। एक दिन उसके यहाँ एक सिद्धयोगी आया। भोजन के समय तीनों रानियाँ सिद्ध को खाना परोसने गयीं, परंतु सिद्ध ने रानियों के हाथों से भोजन परोसने से मना किया और नौकरों के हाथों से परोसा गया खाना खाया। भोजन के बाद राजा जब एकांत में सिद्ध से बात कर रहा था, तब राजा ने पूछा–"योगी महाराज, मैंने ही आपको खाना परोसने के लिए अपनी रानियों को आदेश दिया। आपने उनको क्यों मना किया?"
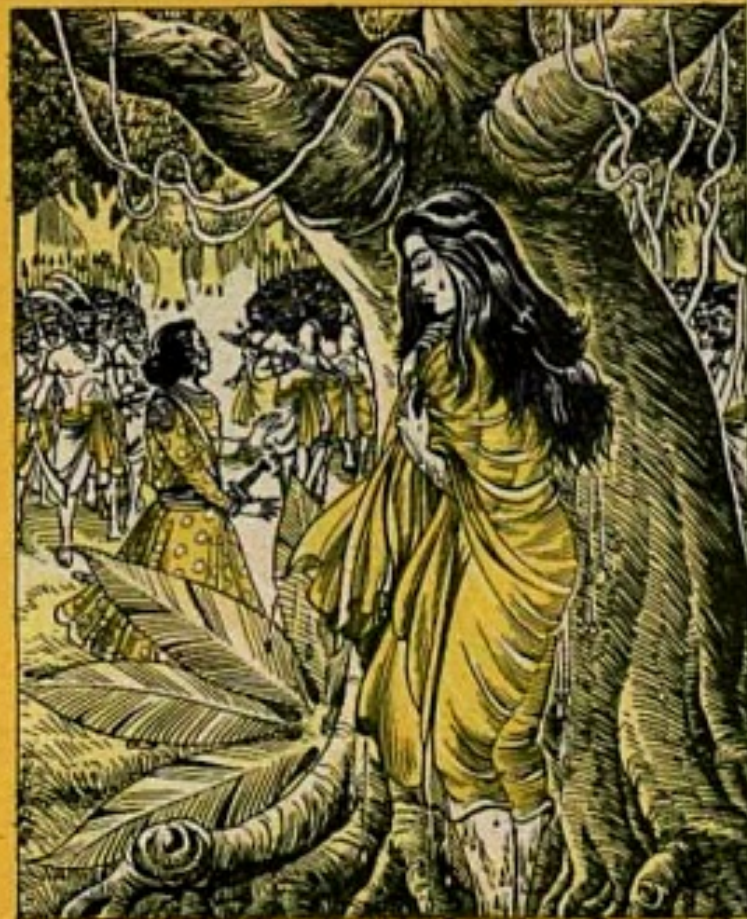
सिद्ध ने राजा की ओर देखा और कहा–"राजन, आपकी रानियों का स्वभाव शायद आप से अधिक मैं ही जानता हूँ। उनमें एक रानी बिलकुल विश्वास करने योग्य नहीं है।" राजा चकित रह गया। वह तीनों रानियों के साथ समान रूप से व्यवहार करता था। रानियाँ भी राजा के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करती थीं। उन

तीनों रानियों के बीच किसी प्रकार की ईर्ष्या व द्वेष तक न थे।

"सिद्धपुरुष! आपकी बातें मुझे बड़ी विचित्र मालूम होती हैं। कृपया बताइये कि मेरी पत्नियों में कौन अविश्वसनीय है?" राजा ने सिद्ध से पूछा।

"राजन, मैं अलग रूप से इस बात का उत्तर नहीं दे सकता। यह बता सकता हूँ कि तीनों रानियों में से एक त्यागने योग्य है। तुम्हीं उस रानी का पता लगाकर उसे शीघ्र भेज दो।" सिद्ध ने उत्तर दिया।

"मुझे किसी पर शंका करने का कोई कारण दिखाई नहीं देता। आप ही यह साबित कर सके कि इनमें कौन विश्वास के पात्र नहीं है, बड़ा अच्छा होगा!" राजा ने कहा।

"साबित करना कोई मुश्किल की बात नहीं है, राजन! मेरे कहे अनुसार करो..." सिद्ध ने राजा को एक उपाय बताया।

थोड़ी देर में यह खबर राजमहल में आग की भांति फैल गयी कि राजा पेट-दर्द से परेशान है। जल्द इलाज न हुआ तो राजा का बचना संभव नहीं है।

सबने सिद्ध योगी के पास पहुँचकर पूछा—"योगी महाराज! इस बीमारी का इलाज क्या है?"

"तीनों रानियाँ अपने चरण धोकर वह पानी राजा के पास भेज दे। उस पानी को पीने से राजा की बीमारी जल्दी अच्छी हो जायगी।" सिद्ध ने कहा।

तुरंत एक दासी तीनों रानियों के अंत:पुरों में स्वर्ण कलश लेकर चरण-धोवन लाने गयी, पर वह अपने साथ दो ही कलश वापस लायी। "महाराज, बड़ी रानी ने पैर-धोवन देने से इनकार किया है।" दासी ने कहा।

राजा ने दासी को भेजकर सिद्ध से पूछा—"महाराज, क्या मेरी पट्टमहिषि ही

अविश्वसनीय है? उसने अपने चरण-धोवन देने से इनकार क्यों किया? क्या यह सोचकर नहीं दिया कि मैं इस बीमारी से मर जाऊँ?"

"राजन, जल्दबाज़ी न करो। दो कुत्ते मंगवा दो।" सिद्ध ने कहा। दोनों कलशों का पानी दो थालियों में डालकर कुत्तों से पिलाया गया। उनमें से एक कुत्ता थोड़ी देर तक छटपटाकर मर गया।

"राजन, देखते हो न, इस कलश को भेजनेवाली रानी त्यागने योग्य है! इसके ज़रिये तुम्हारे प्राणों का खतरा सदा बना ही रहेगा।" सिद्ध ने कहा।

राजा ने अपनी बुद्धि लड़ाकर यह जान लिया कि वह कलश भेजनेवाली उसकी दूसरी रानी है। इसलिए मंझली रानी को त्यागकर वह अपनी दो रानियों के साथ सुखपूर्वक दिन काटने लगा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन, मेरे कुछ संदेह हैं। राजा ने अपनी बड़ी रानी पर जब संदेह किया, तब सिद्ध ने उसकी शंका को गलत क्यों बताया? उसने अपना चरण-धोवन क्यों नहीं भेजा? राजा ने यह कैसे निश्चय किया कि चरण धोवन में उसकी दूसरी रानी ने ज़हर मिलाया है। इन संदेहों का

समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमादित्य ने कहा–"बड़ी रानी ने चरण-धोवन न भेजा, इसलिए यह साबित होता है कि बड़ी रानी निर्दोष है। यदि उसका यह उद्देश्य होता कि उसके चरण-धोवन से राजा की बीमारी का इलाज नहीं होना है तो वह साधारण जल भी भेज देती। यह जानकर भी उसने चरण-धोवन भेजने से इनकार किया कि राजा बीमारी की वजह से मर भी जाय तो यह अपयश उसके सर लगेगा। वास्तव में चरण-धोवन से राजा की बीमारी ठीक हो जायगी, इस बात पर विश्वास करनेवाली केवल छोटी रानी थी। वह जन्मत: जंगली नारी है। अंधविश्वासों पर विश्वास रखनेवाली है। बड़ी रानी की भांति मंझली रानी भी अपने चरण-धोवन से इलाज होने की बात पर यक़ीन नहीं रखती, मगर राजा को मार डालने के लिए चरण-धोवन उसे एक साधन प्रतीत हुआ। चरण-धोवन पीकर भी राजा मर जाता तो लोग यही समझते कि बीमारी का ठीक इलाज न हो पाया, इसलिए राजा मर गया। अगर जल में ज़हर मिलाने की किसी वैद्य ने शंका की तब भी यह निर्णय करना मुश्किल है कि उस जल को किस रानी ने भेजा है। पर बड़ी रानी एक प्रतिष्ठित राज-परिवार में पैदा हुई है और आभिजात्य के गुण उसमें हैं। तीसरी रानी राजा से विवाह कर उन्नत दशा में पहुंच गयी है। इसलिए राजा के द्वारा अपने प्रिय को खोनेवाली विदर्भ राजकुमारी सौम्यलता ही अविश्वसनीय है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

कुरूपिनी राजकुमारी

एक गाँव में एक किसान था। उसके तीन पुत्र थे। जब वे बड़े हुए तब किसान ने उन्हें निकट बुलाकर कहा—"तुम तीनों एक-एक करके देशाटन करने जाओ। धन कमाकर अपनी पसंद की कन्या के साथ विवाह करके वापस लौटो। मेरी जायदाद तुम तीनों बांट लोगे, तो थोड़ी-सी मिलेगी। जिसके पास जायदाद नहीं, उसे लड़की कौन देगा?"

अपने पिता की बातें सुनकर पहले बड़ा पुत्र देशाटन पर निकला। पिता ने उसे राह-खर्च के लिए थोड़ा धन दिया। माँ ने उसे खाने की चीजें बनाकर दीं। बड़ा पुत्र देशाटन करने लगा। रास्ते में उसे एक आदमी मिला। उसने बड़े बेटे को जुआ खेलने बुलाया। बड़ा बेटा यह सोचकर जुआ खेलने को तैयार हो गया कि यदि वह जुआ खेलकर ज्यादा धन कमावे तो वह अपनी यात्रा का फल पा सकता है। धन कमाने पर किसी सुंदर कन्या के साथ बड़ी आसानी से शादी भी कर सकता है।

लेकिन जुए में बड़ा बेटा अपना सारा धन खो बैठा। अब लाचार हो आगे बढ़ा। दुपहर तक वह एक तालाब के पास पहुँचा और खाने बैठा। वह खाने की पोटली खोल ही रहा था कि कोई स्त्री उसके पास आयी और बोली—"मुझे बड़ी भूख लगी है, क्या थोड़ा खाना दोगे?"

वह औरत देखने में भद्दी थी। कुरूपिनी थी। "अच्छी बात है, बैठ जाओ।" बड़े पुत्र ने कहा।

दोनों जब खाना खाने लगे, तब उस औरत ने पूछा—"तुम कौन हो? किस काम से और कहाँ जा रहे हो?"

राजशर्मा

"मैं अमीर की लड़की से शादी करने निकला हूँ। वैसे मेरे कोई काम नहीं है।" बड़े पुत्र ने उत्तर दिया।

"क्या तुम मेरे साथ शादी करोगे? मैं एक राजकुमारी हूँ।" उस औरत ने पूछा।

बड़े बेटे ने उसे देख घृणा करते हुए कहा—"तुम देखने में कुरूपिनी हो। किस देश की राजकुमारी हो? तुम्हारी बातों पर मैं यक़ीन नहीं कर सकता। मेरी औरत ख़ूबसूरत हो! बताओ, तुम्हारे ख़्याल में कहीं ख़ूबसूरत और धनी लड़की है?"

"तुम सीधे इस दिशा में आगे बढ़ोगे तो सूर्यास्त के समय तक तुम एक पुराने क़िले के पास पहुँचोगे। उसके दर्वाज़े बंद दिखाई देंगे। बाहर एक घंटा लटकता दिखाई देगा। अगर तुम वह घंटा बजाओगे तो दर्वाज़े खुल जायेंगे। उस क़िले के भीतर अप्सरा जैसी दो राजकुमारियाँ हैं। तुम से बन सके तो उनमें से एक के साथ शादी करो।" कुरूपिनी नारी ने बताया।

बड़ा बेटा ललचा उठा। वह तुरंत निकल पड़ा। संध्या तक एक निर्जन क़िले के पास पहुँचा। उसके दर्वाज़े बंद थे। उसने बड़ी देर तक दर्वाज़ा खटखटाया, पर दर्वाज़े न खुले। आख़िर उसने पास में लटकनेवाला घंटा बजाया। दर्वाज़े अपने आप खुल गये।

बड़ा बेटा अन्दर चला गया। उसे अन्दर कोई आदमी दिखाई न पड़ा। कई पत्थर की मूर्तियाँ थीं। वे मूर्तियाँ पुरुष और स्त्रियों की भी थीं। उसने सोचा कि उन मूर्तियों को गढ़नेवाला ज़रूर कोई बड़ा शिल्पी होगा। वह उन मूर्तियों को देख ही रहा था कि पीछे से किसी ने पुकारा—"तुम कौन हो? क्या चाहिये?"

बड़ा बेटा चौंककर घूम पड़ा। सामने एक कुरूपिनी बूढ़ी खड़ी थी। उसके हाथ में एक छड़ी थी। वह काले वस्त्र पहने हुई थी।

"मैं शादी करने के लिए कन्या की खोज में आया हुआ हूँ। सुना है कि यहाँ पर सुंदर कन्याएँ हैं।" बड़े बेटे ने कहा।

"मैं तुम्हारी शादी का उचित इंतज़ाम करूँगी। लेकिन पहले तुम मेरे सवालों का जवाब दो।"

"समुद्र से गहरी वस्तु कौन है? कांटे से तेज़ वस्तु क्या है? भूख से क़ीमती चीज़ कौन है?" बूढ़ी ने पूछा। वह एक प्रसिद्ध जादूगरनी थी।

बड़ा बेटा उन सवालों का जवाब नहीं दे पाया। बूढ़ी ने आगे बढ़कर अपनी छड़ी से उसका स्पर्श किया। तुरंत वह एक मूर्ति बन गया।

बड़े को लौटते न देख दूसरा बेटा भी घर से चल पड़ा। उसकी भी जुआख़ोर से मुलाक़ात हुई। उसने दूसरे बेटे को भी जुआ खेलने बुलाया।

"मैं जुआ खेलना नहीं जानता। चाहे तो मेरे धन में से आधा ले लो।" दूसरे ने कहा।

जुआख़ोर ने दूसरे बेटे के आधे रुपये लिए और कहा—"तुम्हारी विजय हो! भूख से क़ीमती चीज़ आशीर्वाद है! भूल न जाओ।" यह कहकर वह अपने रास्ते चला गया।
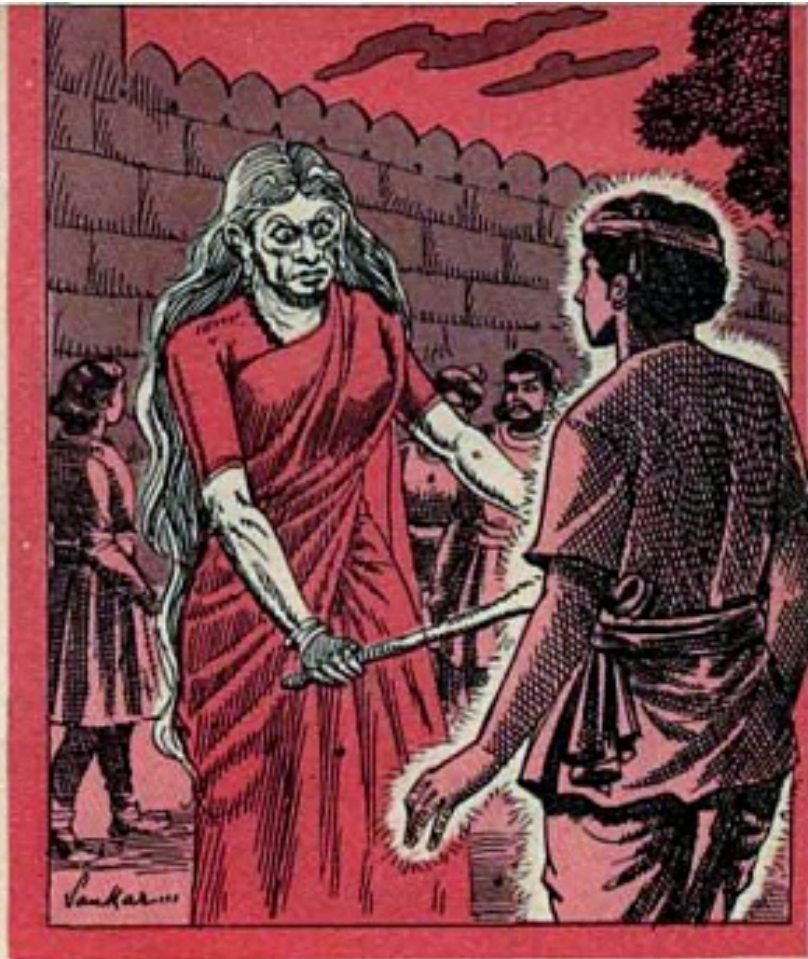
दुपहर तक दूसरा बेटा तालाब के किनारे पहुँचा और खाने बैठा। कहीं से एक कुरूपिनी नारी आ पहुँची और पूछा—"मुझे भूख लगी है। क्या थोड़ा खाना खिलाओगे?"

"चाहे तो खा लो।" दूसरे बेटे ने कहा।

उस नारी ने दूसरे से भी वे ही सवाल पूछे जो बड़े बेटे से पूछे थे।

"मैं धन कमाने और अच्छी कन्या के साथ शादी करने निकला हूँ।" दूसरे ने बताया।

"क्या मेरे साथ शादी करोगे? मैं एक राजकुमारी हूँ।" कुरूपिनी ने पूछा।

उसी वक़्त जादूगरनी ने प्रवेश कर तीन सवाल पूछे। उसको लगा कि वह भूख से क़ीमती चीज़ का जवाब जानता है। पर उस घबराहट में उसे याद न आया। जादूगरनी छड़ी लेकर जब उसकी ओर बढ़ी, तब वह समझ गया कि वह अपना जादू उस पर चलायगी। इसलिए वह दौड़ पड़ा। इतने में जादूगरनी की छड़ी उसे छू गयी और वह एक मूर्ति बन गया।

दूसरे को लौटते न देख कुछ महीने बाद तीसरा पुत्र भी घर से निकल पड़ा।

उसकी भी जुआखोर से मुलाक़ात हुई। जुआ खेलने को उसे निमंत्रण दिया।

"भाई मैं ज़्यादा धन कमाने के ख़्याल से घर से निकल पड़ा हूँ। मेरे पास जो थोड़ा धन है, उसी के लोभ में पड़कर तुम मेरे साथ जुआ खेलना चाहते हो। इसलिए तुम मेरा सारा धन लेकर सुख से रहो।" ये शब्द कहते तीसरे ने अपने धन की थैली जुआखोर के हाथ में दे दी।

"भाई, तुम्हारी विजय हो! यह ख़्याल रखो कि भूख से भी क़ीमती चीज़ आशीर्वाद है।" यह कहकर जुआखोर चला गया।

"तुम भले ही राजकुमारी हो, पर तुम जैसी कुरूपिनी से मैं शादी कैसे कर सकता हूँ?" झट दूसरे बेटे ने कहा।

"तब तो तुमको वह जगह बताऊँगी जहाँ कि अप्सरा जैसी कन्याएँ रहती हैं। तुम से बन सके तो उनमें से एक के साथ शादी करो।" ये शब्द कहकर उसने जादूगरनी के क़िले का समाचार सुनाया।

दूसरा बेटा क़िले के पास पहुँचा। घंटा बजाकर भीतर गया। वहाँ की मूर्तियों को देखता रह गया। आखिर अपने भाई जैसी एक मूर्ति को देख वह दंग रह गया।

तीसरा बेटा दुपहर तक तालाब के पास पहुँचा और खाने की पोटली खोल दी। कहीं से उस समय एक कुरूपिनी नारी आयी और पूछा–"मुझे भूख लगी है। थोड़ा खाना खिलाओगे?"

"ज़रूर खाओ। भूख कांटे से भी तेज वस्तु है।" तीसरे ने कहा।

इसके बाद उस नारी ने तीसरे से भी वे ही सवाल पूछे।

"मेरे पिता ने हम तीन भाइयों को अपनी जिंदगी आप जीने और अपनी अपनी शादियां खुद करने की आज़ादी देकर देशाटन पर भेजा। मेरे भाई इस काम में अब तक सफल हुए होंगे। अब मेरी बारी आ गयी है।" तीसरे ने कहा।

"मेरे साथ शादी क्यों नहीं करते? मैं एक राजकुमारी हूँ।" कुरूपिनी ने पूछा।

"अगर एक राजकुमारी खुद मुझ से विवाह करना चाहे तो मैं इनकार कैसे कर सकता हूँ? तुम मुझे अपने घर ले जाओ। बड़े लोगों से मैं बात करूँगा।" तीसरे ने कहा।

"मेरे परिवार के लोग इस समय एक उजड़े क़िले में हैं। तुम वहाँ जाकर पहले उन्हें क़िले से बाहर ले आओ। मैं भी

थोड़ी देर बाद वहाँ आ पहुँचूंगी।" इन शब्दों के साथ कुरूपिनी ने जादूगरनीवाले क़िले का समाचार सुनाया।

तीसरा बेटा वहाँ से चल पड़ा।

"तुम मुझे भूल न जाओ। मैं तुम से हृदय से प्यार करती हूँ। प्रेम समुद्र से गहरा होता है।" ये बातें कहकर कुरूपिनी वहाँ से कहीं चली गयी।

तीसरा बेटा क़िले में पहुँचा। घंटा बजाकर भीतर गया तो अपने भाइयों की मूर्तियाँ देख वह दुखी हो उठा।

इतने में जादूगरनी ने प्रवेश कर पूछा– "तुम कौन हो? यहाँ क्यों आये हो?"

तीसरे ने पहचान लिया कि यह बूढ़ी जादूगरनी है।

"मैं शादी के काम पर आया हूँ।" तीसरे ने बताया।

"मैं तुम्हारी शादी करूँगी। पहले तुम मेरे तीन सवालों का जवाब तो दो।"

जादूगरनी ने तीन सवाल किये। तीसरे बेटे ने उन सवालों का जवाब दिया– "समुद्र से गहरा प्रेम होता है। कांटे से भी तेज़ भूख है! खाने से भी क़ीमती वस्तु आशीर्वाद है।"

"शाबाश! तब तो तुम मेरे साथ शादी करो।" बूढ़ी जादूगरनी ने पूछा।

"मैं ज़रूर शादी करूँगा। अग्नि को साक्षी बनाकर शादी करूँगा। इंतज़ाम करो।" तीसरे ने कहा।

बूढ़ी ने मंत्र-दण्ड से ज़मीन पर प्रहार किया। तुरंत वहाँ आग पैदा हुई।

"तुम अपना हाथ बढ़ाओ। हमें सात बार अग्नि की प्रदक्षिणा करनी है।" ये शब्द कहते उसने अपने बाये हाथ में जादूगरनी के दाये हाथ को लेना चाहा और उसके दायें हाथ की जादू की छड़ी खींच ली। उसे तोड़कर आग में डाल दी।

दूसरे ही क्षण जादूगरनी चिल्लाकर ज़मीन पर लुढ़क पड़ी। उसके प्राण पखेरू के उड़ते ही पत्थर की सभी मूर्तियाँ मनुष्यों के रूप में बदल गयीं। उसी समय एक सुंदर युवती भीतर आ पहुँची। उसने अपने माता-पिता और बड़ी बहनों से मिलकर उनको गले लगाया। सबकी आँखों से आनंद-बाष्प गिर पड़े। इस बीच तीसरा भाई अपने बड़े भाइयों से मिला। भीतर आयी हुई सुंदर युवती ने अपने परिवार के लोगों को तीसरे बेटे का परिचय कराते हुए कहा–"इसी व्यक्ति ने हम सबको बचाया है। मैं इसी के साथ विवाह करने जा रही हूँ।"

तीसरे बेटे ने घबराकर कहा–"नहीं, नहीं, मैंने एक राजकुमारी के साथ शादी करने का वचन दिया है। वह मुझसे प्यार करती है।"

सुंदर युवती हँस पड़ी और बोली–"वह तो कुरूपिनी है। उसके साथ शादी क्यों करना चाहते हो? मेरे साथ करो।"

"तुम्हें तो उस युवती के प्रति कृतज्ञ रहना है। उसकी कृपा से आप सब फिर मनुष्य बन गये हैं। उसकी कृपा से ही मेरे दो बड़े भाई मुझे मिल गये हैं।" तीसरे ने कहा।

"मैं ही वह कुरूपिनी हूँ। उस जादूगरनी ने मेरे परिवार के सभी लोगों को पत्थर की मूर्तियाँ बनायी है। मैं क़िस्मत से मूर्ति बनने से बच गयी। लेकिन जादूगरनी ने मुझे कुरूपिनी बना दिया।" उस सुंदरी ने समझाया।

उस संदरी का पिता समीप के एक नगर का राजा था। उसने किसान के तीनों बेटों को अपने नगर में ले जाकर अपनी तीनों कुमारियों का विवाह उनके साथ किया। वे सब बड़े सुख से रहने लगे।

चाँदी का अण्डा

एक छोटे देश में एक राजा था। उसके एक सुंदर लड़की थी। उसका नाम प्रमदा था। वह हमेशा चित्र-विचित्र बातें सोचती और कल्पना की दुनिया में विचरती। वह अक्सर सपने भी देखती, उसके सपने भी बड़े सुंदर और विचित्र हुआ करते। प्रमदा जब युक्त वयस्का हुई तब राजा और रानी उसके विवाह के बारे में सोचने लगे।

"लड़की हमेशा कल्पना की दुनिया में विचरती रहती है। बड़ी भोली है! न मालूम इसे कैसा पति मिलेगा!" प्रमदा के माता-पिता रोज़ चिंता किया करते थे। इन्हीं दिनों में प्रमदा ने एक सपना देखा। वह बड़ा ही विचित्र सपना था। ऐसा विचित्र सपना उसने इसके पहले कभी न देखा था।

सपना देखते समय प्रमदा एक विचित्र दुनिया में थी। वहाँ के पेड़ और पत्ते सोने के थे। उसके फूल मानिक और नील मणियों के थे। वहाँ पर मोर नाच रहे थे। उनके पंखों में रंग-बिरंगे रत्न थे। चंदन की लकड़ियाँ बिछे रास्ते पर प्रमदा घूम-घूमकर प्रसन्न हो रही थी।

इसी समय एक अनोखी घटना हुई। कहीं से एक सोने का बतख उड़ता हुआ आया और थोड़ी दूर पर आ उतरा। कोई युवक अचानक उस बतख के पास आया। तभी वह बतख उड़ गया। बतख जहाँ उतरा था, वहाँ पर एक अण्डा पड़ा था। युवक वह अण्डा उठा लाया, प्रमदा के निकट पहुँच कर अण्डा उसके हाथ दे चला गया। प्रमदा ने अण्डे को देखा। वह चाँदी का अण्डा था!

दूसरे दिन प्रमदा ने अपने सपने का समाचार सबको सुनाया और कहा—"वह अण्डा मामूली अण्डा नहीं है। वह सपना

भी केवल कल्पित नहीं। मैंने सपने में जो प्रदेश देखा, वह कहीं ज़रूर है। सपने में मिलकर जिस युवक ने मुझे अण्डा दिया, वही मेरा पति बनेगा।" ये बातें कहकर उसने शपथ की कि चाँदी का अण्डा देनेवाले युवक को छोड़ वह किसी दूसरे युवक से शादी न करेगी।

प्रमदा के माता-पिता अपनी लाड़ली बेटी को डांट भी न पाये।

"बेटी, यह बताओ, जो युवक तुमको सपने में दिखायी दिया, वह कैसा है? ऐसे ही युवक से तुम्हारी शादी करेंगे।" माता-पिता ने पूछा।

"मुझे ठीक से याद नहीं है। लेकिन मुझे वह चाँदी का अण्डा ला देगा तो मैं पहचान लूँगी।" प्रमदा ने बताया।

जब सभी राजकुमारों को यह मालूम हुआ कि प्रमदा बतख का चाँदी का अण्डा लानेवाले के साथ ही शादी करेगी, तब उन सबने प्रमदा के साथ शादी करने की आशा छोड़ दी। कुछ लोगों ने बतख के चाँदी के अण्ड की खोज शुरू कर दी।

प्रमदा के साथ विवाह करने की प्रबल इच्छा रखनेवालों में विजय नामक एक राजकुमार भी था। उसने जब प्रमदा के सपने की बात सुनी, तब अपने दरबारी

जादूगर को बुलाकर पूछा—"मुझे बतख का चाँदी का अण्डा चाहिये। उसे कैसे प्राप्त करे?"

जादूगर ने कई किताबें उलट-पलटकर एक उपाय निकाला। वह एक मामूली बतख का अण्डा लेकर विजय को साथ ले अपनी प्रयोगशाला में गया। अण्डे को साफ़ करके पोंछ दिया। उसे सुखाकर तेल के दीपक की कालिख पर रखकर उसे काला बनाया। चिमटे से उसे घूमाते चारों तरफ़ कालिख लगवा दी। इसके बाद एक कांच के पात्र में पानी डाल दिया। चिमटे से ही उस अण्डे को पानी में डुबोकर पकड़ा रखा। कुछ ही क्षणों में वह अण्डा चाँदी के अण्डे की तरह चमकने लगा।

"राजकुमार! यह अण्डा ले जाकर राजकुमारी को दिखाओ। उसे बता दो कि इस अण्डे को छूने या पानी में से निकालने पर उसका असर जाता रहेगा। फिर उसके साथ शादी करके पत्नी के साथ लौट आओ।" ये बातें समझाकर जादूगर ने विजय को भेज दिया।

बतख के चाँदी के अण्डे को देख प्रमदा अपने को भूल गयी। वह पानी में से उस अण्डे को बाहर निकालने लगी। तब विजय ने उसे रोकते हुए कहा—"यह अण्डा इस दुनिया का नहीं है। अगर हम इसे छू लेंगे तो इसका प्रभाव जाता रहेगा।"

राजकुमारी ने बताया कि उसने इसी युवक को सपने में देखा था।

प्रमदा के माता-पिता खुशी से फूले न समाये। उन्होंने विजय के साथ प्रमदा का विवाह किया। विवाह के बाद विजय ने अपनी पत्नी को यह युक्ति बतायी। प्रमदा ने उसे क्षमा कर दिया।

विजय ने जो युक्ति की, उसे हम भी कर सकते हैं!

धूर्त बुढ़िया

हारूसल रषीद जब बगदाद का खलीफ़ा था तब उसके राज्य में कबूतरों की डाक चलती थी। इस काम को चलाने के लिए खलीफ़ा ने एक योग्य व्यक्ति को नियुक्त किया और उसे मासिक एक हज़ार दीनार वेतन देने लगा।

लेकिन कुछ साल बाद वह आदमी मर गया। उसकी मौत के साथ साथ कबूतरों की डाक भी बंद हुई। इस डाक को चलाने के लिए जो कबूतर, नीग्रो गुलाम और चालीस शिकारी कुत्ते नियुक्त थे, वे सब खलीफ़ा के पास लौट आये।

कबूतरों की डाक चलानेवाले के दिलैला नामक पत्नी और जीनाब नामक बेटी भी थी। अपने पति के मरने के बाद दिलैला ने खलीफ़ा की सेवा में अर्ज़ी भेजी कि वह भी कबूतरों की डाक चला सकती है और उसे वही वेतन दिया जाय जो उसके पति को मिला करता था। मगर खलीफ़ा ने उसकी अर्ज़ी नामंज़ूर की। क्योंकि दिलैला की सामर्थ्य पर उसे संदेह था।

इस घटना के कुछ दिन बाद खलीफ़ा ने दो मशहूर डाकुओं को कोत्वाल के पद पर नियुक्त किया। उनमें एक का नाम अहमद और दूसरे का नाम हसन था। खलीफ़ा ने पहले उन दोनों को पकड़ने के सभी प्रकार के प्रयत्न किये, आखिर असफल हो यह सोचकर उन्हें वह पद दिया कि समर्थ डाकू कोत्वाल का काम अच्छे ढंग से संभाल सकते हैं।

खलीफ़ा ने दिलैला की प्रार्थना अस्वीकार करके डाकुओं को बड़े ओहदे दिये, इसलिए उसे खलीफ़ा पर बड़ा क्रोध आया। उसने अपनी बेटी जीनाब से कहा–"इस देश में डाकुओं और दगाखोरों को बड़े पद मिलते हैं, और उनका आदर होता है तो क्या

गुलशन राय

हम ही नालायक़ हैं? देखो, मैं साबित कर दिखाऊँगी कि यह हसन और अहमद मेरे सामने किसी काम के नहीं ।"

दिलैला यों तो अधेड़ उम्र की थी, लेकिन युक्ति और चालाकी में बड़ी निपुण थी । जीनाब भी अपनी माँ से किसी बात में कम न थी ।

दिलैला ने निश्चय किया कि अपनी युक्तियों से बगदाद नगर को थर्रा देना है! उसने एक दिन अपने कंठ में जपमालाएँ डाल लीं, मुँह पर बुरखा डाला, हाथ में सूफ़ी फकीरों का झंडा लिया और सूफी सन्यासिनी के वेश में घर से निकल पड़ी ।

मुस्तफ़ा नामक व्यक्ति बगदाद के बड़े अधिकारियों में से एक था । वह खलीफ़ा के रक्षक-दल का नेता था । उसे बड़ी अच्छी तनख्वाह मिलती थी । उसका महल बहुत ही बड़ा था । उसमें चन्दन की लकड़ी से तैयार किये गये किवाड़ और चाँदी के ताले लगे थे । उसकी पत्नी बड़ी सुंदर थी । उसका नाम खातून था । मुस्तफ़ा अपनी पत्नी को जान से अधिक प्यार करता था । इसलिए उसे संतान न होने पर भी उसने दूसरी शादी न की थी । लेकिन वह हमेशा अपने मन में इस बात की चिंता किया करता था कि अन्य अधिकारियों जैसे दरबार में अपने साथ ले जाने के लिए एक भी पुत्र न रहा ।

खातून को मालूम था कि उसका पति संतान के लिए बड़ा व्याकुल है । इसलिए वह भी बड़ी दुखी हुई । उसने संतान पाने के लिए अनेक दवाइयाँ लीं, मंत्र-तंत्र कराये, मगर उसे सफलता न मिली ।

दिलैला सूफी सन्यासिनी के वेष में 'अल्लाह' का नाम लेते नगर की गलियों में घूम रही थी । उसने मुस्तफ़ा के मकान के पास पहुँचते ही सर उठाकर ऊपर देखा । महल की खिड़की के पास क़ीमती
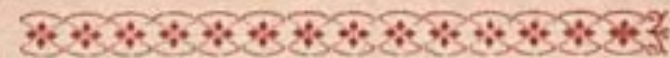
गहने पहने खातून खड़ी थी। वह नयी दुलहन सी लग रही थी।

"उस युवती को ले जाकर उसके सारे गहने हड़प न लूँ तो मेरी अक़्लमंदी किस बात की?" दिलैला ने दिल में सोचा।

दिलैला को देखते ही खातून के मन में भी आशा जगी कि शायद वह सूफ़ी सन्यासिनी उसे संतान पाने का कोई मार्ग बता दे। तुरंत उसने उस सन्यासिनी को बुला लाने के लिए एक दासी को भेजा।

दासी दिलैला को महल पर बुला लायी। खातून ने दिलैला के चरणों पर गिरकर अपनी समस्या बता दी।

"तुम्हारी समस्या कोई बड़ी समस्या नहीं है। इस नगर में संतान देनेवाला एक साधु है। तुम उसके दर्शन करोगी तो वह तुम्हारी इच्छा की पूर्ति होने का उपाय बता देगा।" दिलैला ने समझाया।

खातून ने दुख भरे स्वर में कहा—"मैं कभी देहली पार कर बाहर नहीं गयी।"

"तब तो तुम मेरे साथ चलो। अभी मैं तुमको उस साधु के पास ले जाऊँगी। तुम्हारे पति के घर लौटने के पहले तुम लौट सकती हो।" दिलैला ने कहा।

खातून यह सोचकर खुश हुई कि उसकी इच्छा साधु के दर्शन करने पर ज़रूर पूरी होगी। उसने बाक़ी सब गहने पहन लिये और वह दिलैला के साथ चल पड़ी।

थोड़ी दूर चलने पर सिद्दी मोहसिन नामक आदमी की दुकान आयी। सिद्दी मोहसिन एक जवान था। उसकी शादी न हुई थी। उसे देखते ही दिलैला के मन में कोई विचार आया। उसने खातून को बाहर एक चबूतरे पर बिठाया और वह दुकान के अन्दर चली गयी।

दिलैला ने मोहसिन से कहा—"देखो बेटा, बाहर चबूतरे पर बैठी खूबसूरत

जवान औरत मेरी लड़की है। तुम जैसे बुद्धिमान के साथ में अपनी बेटी की शादी करना चाहती हूँ। उसके पिता ने खूब व्यापार करके धन कमा रखा है। मैं तुमको मुँह माँगा दहेज दूँगी। तुम ऐसी दो दुकानें खोल सकते हो।"

मोहसिन बहुत खुश हुआ। उसने पूछा–"अच्छी, बात है! बताओ, कब मेरी शादी करोगी?"

"मेरे साथ चलोगे तो अभी करूँगी, बेटा!" दिलैला ने कहा।

मोहसिन दीनारों की थैली बगल में दबाये दिलैला के पीछे चल पड़ा। दिलैला खातून और मोहसिन को साथ ले आगे बढ़ी तो उसे रंगसाज हज मुहम्मद की दूकान दिखाई पड़ी।

दिलैला ने खातून और मोहसिन को थोड़ी दूर पर खड़ा किया और वह दूकान के अन्दर चली गयी। उसने मुहम्मद से कहा–"भाई, सुनो, मेरा मकान गिरने की हालत में था। इसलिए मैं उसकी मरम्मत करवा रही हूँ। वहाँ पर जो खड़े हैं, वे मेरे बेटे और बेटी हैं। हमें चार-पाँच दिन के लिए तुम्हारे परिचित किसी का खाली मकान हो तो दिला दो।"

मुहम्मद ने झट कहा–"मेरे निजी मकान का ऊपरी हिस्सा अभी खाली ही पड़ा है। चार-पाँच दिन चाहे तो तुम लोग उसमें रह सकते हो।" यह कहकर मुहम्मद ने दिलैला के हाथ चाभी दे दी।

दिलैला खातून और मोहसिन को लेकर हज मुहम्मद के घर गयी। नीचे का एक कमरा खोलकर मोहसिन को इशारा किया कि वह भीतर चला जाय, इसके बाद खातून को साथ ले मकान के ऊपरी हिस्से में चली गयी। तब दिलैला ने खातून को समझाया–"बेटी, साधु इस मकान के निचले तल्ले में रहते हैं। मैं अभी जाकर

उनसे मिल आती हूँ। इस बीच में तुम अपने सारे गहने उतारकर हिफ़ाज़त से एक कपड़े में बाँध दो और साधू महाराज के दर्शन के लिए तैयार हो जाओ। उनके सामने गहने सजा कर जाना महान अपराध है।" ये बातें कहकर दिलैला नीचे उतर गयी। दिलैला को देखते ही मोहसिन ने पूछा—"क्यों, माईजी, शादी की बातें तै कर लें?"

दिलैला ने रोने का बहाना करते कहा—"बेटा, मैं क्या बताऊँ? किसी दुष्ट ने मेरी लड़की को तुम्हारे बारे में झूठी बातें बताकर उसका मन तोड़ डाला है। किसी ने उसे बताया है कि तुम्हें कोढ़े की बीमारी है, वह तुमसे शादी करने से इनकार कर रही है। तुम अपना कुर्ता उतारकर बैठ जाओ। मैं अपनी बेटी को लाकर मनवा लूँगी। तुम अपना कुर्ता और थैली मेरे हाथ दो। मैं ऊपर हिफाजत से रखूँगी।"

मोहसिन ने दिलैला की बातों पर यक़ीन कर एक हज़ार दीनारों वाली थैली और कुर्ता दिलैला के हाथ में दिया। उनको लेकर दिलैला ऊपर के कमरे में गयी और खातून से बोली—"साधु महाराज तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं। समझो, तुम्हारी क़िस्मत खुल

गयी है! नीचे चली जाओ। मैं तुम्हारे गहनों की पोटली छिपा कर अभी चलती हूँ।"

खातून नीचे उतरकर कमरे के भीतर चली गयी। उसके पीछे दो गठरियाँ ले दिलैला नीचे उतर आयी और सीधे गली में घुस गयी। खातून ने कमरे के अन्दर जाकर साधु का इंतज़ार किया। मगर उसे साधु की जगह मोहसिन दिखाई पड़ा। उसने खातून से कहा—"लो, ठीक से देखो, कहीं मेरे बदन पर कोढ़े के दाग़ हैं!"

खातून घबरा गयी। वह झट ऊपर के कमरे की ओर दौड़ गयी। कमरे के

भीतर जाकर उसने कुंड़ी चढ़ा ली। पर वहाँ न सूफ़ी सन्यासिनी थी और न उसके गहनों की पोटली ही थी।

दिलैला ने उन गठरियों को ले जाकर अपने परिचित व्यक्ति की एक दूकान में रख दिया, तब हज मुहम्मद की दूकान में जाकर बोली-"भाई साहब, तुम्हारा मकान बड़ा अच्छा है। मैं अपना सामान लाने घर जा रही हूँ। दोनों बच्चे भूखे होंगे। तुम यह दीनार ले लो और उन्हें खाने का सामान लेते जाओ। उनके साथ तुम भी खा लो।"

हज. मुहम्मद ने दिलैला से दीनार लेकर अपने नौकर को आदेश दिया कि वह उसके लौटने तक दूकान की देखभाल करे और वह चल पड़ा। इसके बाद दिलैला अपनी गठरियों को ले रंगसाज़ की दुकान पर लौट आयी और दुकान की देखभाल करनेवाले लड़के से बोली-"सुनो, तुम्हारा मालिक नानबाई के यहाँ है। तुम्हें बुला रहा है। जल्दी जाओ। तुम्हारे लौटने तक मैं दुकान की देखभाल करूँगी।"

नौकर दिलैला की बातों पर यक़ीन कर चला गया। दिलैला ने उस दुकान से अपने लिए आवश्यक सारी चीजें इकट्ठी कीं। इतने में दुकान के सामने से एक युवक एक गधे पर बोझ लादे जाते दिखाई पड़ा। उसको रोककर दिलैला ने कहा-"सुनो बेटा, तुम इस दूकानदार को जानते हो न? यह मेरा बेटा है! मेरे बेटे को कर्ज़दार पकड़ ले गये हैं। यह सारा सामान गाँववालों का है। यह सब उनको लौटाना है। क्या तुम इसे अपने गधे पर लादकर मेरे साथ भेज सकते हो? लो, यह दीनार रख लो। मेरे लौटने तक दूकान का बचा माल तोड़-फोड़ कर डालो, वरना वे लोग जब्त करेंगे।"

युवक ने मान लिया।

दिलैला सारा सामान उस गधे पर लादकर वहाँ से चली दी।

अपनी माँ को देखते ही जीनाब ने पूछा–"माँ! क्या क्या लिये आयी हो?"

"अरी, और क्या? चार लोगों की आँखों में धूल झोंककर आयी हूँ। ये गहने एक अधिकारी की पत्नी के हैं। दीनारों की यह थैली और कुर्ता एक जवान दूकानदार के हैं। गधे पर लदा हुआ सारा माल एक रंगसाज़ का है। यह गधा चौथे का है।" दिलैला ने घमण्ड भरे स्वर में कहा।

"तुमने जो कुछ किया, ठीक ही किया। लेकिन अब घर से मत निकलो। वे चारों तुम्हारी खोज करते होंगे।" जीनाब ने समझाया।

"अरी, अभी हुआ ही क्या है? जो होना है, आगे होगा!" दिलैला ने कहा।

रंगसाज़ नानबाई के यहाँ रोटियाँ और सब्ज़ी खरीद रहा था। उसके नौकर ने आकर पूछा–"साहब, मुझे क्यों बुलाया?"

रंगसाज़ की समझ में न आया कि बूढ़ी दिलैला ने नौकर से यह बात क्यों कही कि उसने नौकर को बुलाया है। रंगसाज़ ने झट अपनी दुकान को लौटकर देखा। गधेवाला जवान दुकान की तोड़-फोड़ कर रहा है।

"अरे मूर्ख, यह तुम क्या करते हो?" रंगसाज़ ने उस जवान को डांट बतायी।

"क्या कर्जदारों ने तुमको छोड़ दिया?" जवान ने रंगसाज़ से पूछा।

उस युवक की बातें रंगसाज की समझ में न आयीं। आखिर सारी बातें उनकी समझ में आ गयीं। तब रंगसाज़ ने पूछा–"वह बूढ़ी दिलैला कहाँ?"

"यह तो बताओ कि मेरे गधे का क्या हुआ?" युवक ने अचरज में आकर पूछा।

दोनों सर पीटने लगे। वहाँ पर लोगों की भीड़ लग गयी। सब मिलकर रंगसाज़ के निजी मकान की ओर दौड़े।

रंगसाज़ ने दर्वाज़ा खटखटाया तो मोहसिन ने आकर दर्वाज़ा खोल दिया। वह नंगे बदन था।

"अरे बदमाश! तुम्हारी माँ कहाँ चली गयी?" रंगसाज़ ने डांटकर पूछा।

"अरे, यह तुम क्या पूछते हो? मेरी माँ कभी की मर गयी है।" मोहसिन ने जवाब दिया। थोड़ी देर बाद एक की बात दूसरे की समझ में आयी।

"वह बूढ़ी मेरी माँ नहीं, वह मुझ से यह कहकर यहाँ ले आयी कि वह अपनी बेटी की शादी मेरे साथ करेगी। माँ और बेटी दोनों मकान के ऊपरी कमरे में हैं।" मोहसिन ने समझाया।

रंगसाज़ ने ऊपर जाकर दर्वाज़े पर दस्तक दी तो खातून ने दर्वाज़ा खोला।

"तुम्हारी माँ कहाँ चली गयी?" रंगसाज़ ने पूछा।

"मेरी माँ कभी की मर गयी है।" खातून ने कहा।

सब ने अपनी-अपनी कहानी सुनायी तो असली बात प्रकट हो गयी। बूढ़ी के धोखे का पता चला। खातून को उसका घर पहुँचा कर बाक़ी तीनों ने नगर रक्षक खालिद के पास जाकर सारी बातें समझायीं।

खालिद ने सारी बातें सुनकर कहा— "इस महानगर में कई बुढ़िया हैं। उनमें से तुम लोग जिस बूढ़ी की बात कहते हो, उसे कैसे पकड़ा जाय? तुम्हीं लोग उसे पकड़ लाओगे तो मैं उसे कड़ी सज़ा दूंगा।"

आखिर लाचार हो धोखा खाये वे तीनों लोग दिलैला की खोज में तीन दिशाओं में गये। (और है)

वाणी कुमारी

पतंगपुर का राजा भाग्यसिंह था। वह सब प्रकार से नाक़ाबिल था। कायर भी था। अव्वल दर्जे का बेवकूफ़ भी था। प्रजा रोज़ उसे गालियाँ दिया करती थी। लेकिन उनकी समझ में न आया कि भाग्यसिंह के इस शासन से मुक्ति कैसे पावे? क्योंकि उस राजा का मंत्री दुर्जय उससे ज्यादा महा मूर्ख और बदमाश था। लेकिन मंत्री के पास कुछ क्षुद्र शक्तियाँ थीं। इसलिए लोग उससे डरते थे। राजा भी अपने मंत्री से डरता था। राजा यह बात भली भांति जानता था कि मंत्री राज्य-शासन की बातें बिलकुल नहीं जानता है। मगर उसे हटाकर दूसरे मंत्री को नियुक्त करने की हिम्मत उसमें न थी। वह यह भी जानता था कि जनता उसे अभाग्यवर्मा और मंत्री को दुर्जन मंत्री कहकर पुकारती है!

पतंगपुर के पड़ोस में एक दूसरा देश था। उसके राजा का नाम करालध्वज था। करालध्वज महान क्रूर था। पर शक्तिशाली था। यह प्रतीति थी कि युद्ध में उसे कोई हरा नहीं सकता है!

करालध्वज ने एक दिन भाग्यसिंह के पास एक दूत भेजा। दूत से कहलाया– "तुम मेरे साथ संधि करोगे या तुम्हारे राज्य का नाश करूँ।"

भाग्यसिंह दूत की बातें सुनकर आपाद मस्तक कांप उठा। उसने मंत्री दुर्जय की सलाह माँगी। दुर्जय ने समझाया– "महाराज, ऐसे जबर्दस्त शत्रु से संधि कर लेना ही उचित होगा। मेरे मंत्रों की शक्तियाँ उस पर प्रभाव डाल न सकेंगी। उसे बेताल का सहारा प्राप्त है।"

भाग्यसिंह ने कराल से संधि करने को मान लिया। संधि के अनुसार यह निर्णय

गिरीश कुमार

हुआ कि हर दीपावली के दिन भाग्यसिंह पंद्रह वर्ष से कम अवस्था की बारह कन्याओं तथा एक हज़ार गायों को कराल की सेवा में उपहार स्वरूप भेज देगा।

यह संधि गुप्तरूप से ही हुई थी किंतु धीरे-धीरे यह बात प्रजा को भी मालूम हो गयी। जनता ने इस अपमानजनक संधि पर अपने राजा की ख़ूब निंदा की। कुछ लोगों ने आपस में कहा भी–"इस से अच्छा यही होता कि शत्रु से युद्ध करके उसके हाथों में मर जाता!"

दीपावली के निकट पड़ते ही राजा ने पंद्रह वर्ष के कम अवस्था की बारह कन्याओं का संग्रह करने का प्रयत्न शुरू किया। राजकर्मचारी गायों की झुंड रखनेवाले बड़े-बड़े किसानों के यहाँ से कर के रूप में गायों को इकट्ठा किया।

बंशीलाल नामक एक अमीर किसान राजधानी नगर तथा पहाड़ों के बीच एक गाँव में निवास करता था। जब उसे मालूम हुआ कि राजा ज़बर्दस्ती गायों को छीन रहा है तो उसने अपनी सारी गायें बेचकर बकरियाँ ख़रीद लीं। यों तो वह बड़ा स्वाभिमानी था। फिर भी जब तक उसके सर पर कोई समस्या आ नहीं पड़ती तब तक वह उसमें दख़ल न देता था।

एक-दो साल कराल को उपहार बराबर प्राप्त हुए। तीसरे साल भाग्यसिंह के मन में एक शंका पैदा हुई। उसके एक ही संतान थी। उस कन्या का नाम वाणी था। वाणी बड़ी सुंदर थी। चालाक भी थी! वह चौदहवीं साल में प्रवेश कर चुकी थी। अगली दीपावली को अगर करालध्वज उस कन्या की माँग करे तो क्या होगा?

भाग्यसिंह ने अपने मंत्री को बुलाकर कहा–"अगली दीपावली को हम जिन

बारह कन्याओं को करालध्वज के पास भेजनेवाले हैं, उनमें वाणी की भी वह माँग करे तो हमें क्या करना होगा? तुमने देखा है न, पिछली बार हमने जो कन्यायें भेजीं, उनमें दो कन्याओं को असंदुर बताकर वह कैसे हम पर नाराज हो गया था? यह कैसा कठिन है कि हमारे इस छोटे से राज्य में बारह सुंदरियों को, तिस पर भी कन्याओं को ढूंढ़े?"

मंत्री ने इस समस्या का समाधान पहले ही सोच रखा था। मंत्री दुर्जय के विलंब नामक एक नालायक़ पुत्र था। वह पंद्रह-सोलह साल का था। पढ़ाई में वह निकम्मा निकाला था।

"राजकुमारी का दीपावली के अन्दर विवाह करना होगा। इसके सिवा कोई दूसरा मार्ग नहीं है। विवाह भी गुप्त रूप से संपन्न होना है। यदि हम सभी देशों के राजकुमारों के पास विवाह का निमंत्रण देते दूत भेज देंगे तो करालध्वज को यह समाचार मालूम हो जायगा और वह हमारे इस प्रयत्न में बाधा डालेगा। इसलिए आपकी आज्ञा हो तो मैं एक उपाय बता देता हूँ। हमारे विलंब के साथ राजकुमारी का गुप्त रूप से विवाह कर

दे तो हम इस आफ़त से बच जायेंगे।" मंत्री दुर्जय ने सलाह दी।

यह बात सुनते ही राजा घृणा से खीझ उठा। वह विलंब से नफ़रत करता था। मगर अब दुर्जय की सलाह से भिन्न कोई दूसरा उपाय दीख नहीं रहा था। राजा को मंत्री की सलाह का पालन करना पड़ता है।

"मैं अपनी पुत्री से भी परामर्श करूँगा। अगर उसे कोई आपत्ति न हो तो ऐसा ही करेंगे।" राजा ने कहा।

"यह बात राजकुमारी को आपके समझाने पर निर्भर है!" मंत्री ने कहा।

राजकुमारी वाणी विलंब के साथ विवाह करने को तैयार न हुई। उसने कहा—"इस छोटी-सी उम्र में मेरी शादी क्यों करना चाहते हैं? अगर कभी मैं शादी करूँगी भी तो विलंब जैसे नालायक़ के साथ नहीं। आपने जो बेमतलब की संधि की है, उसे जो वीर तोड़ देगा, मैं उसी के साथ शादी करूँगी।"

राजा भय के मारे कांपते हुए बोला—"अगली दीपावली तक तुम्हारी शादी न करूँ तो शायद तुमको भी करालध्वज के पास उपहार के रूप में भेजना पड़ेगा। इससे हज़ार गुने यही अच्छा होगा कि तुम मंत्री के पुत्र विलंब के साथ शादी करो।"

"अगर लाचारी है तो मुझे भी उस राक्षस का उपहार बनाकर भेज दीजिये। अब तक आपने जिन कन्याओं को भेजा और भविष्य में जिन कन्याओं को भेजना चाहते हैं, क्या वे सब मेरी जैसी कन्याएँ नहीं हैं?" वाणी ने कहा।

राजा में यह हिम्मत न थी कि वह मंत्री से यह कहे कि राजकुमारी विलंब के साथ शादी करना नहीं चाहती, इसलिए उसने कहा—"एक बार विलंब राजकुमारी से स्वयं बात करे तो अच्छा होगा।"

लेकिन जब विलंब राजकुमारी के पास पहुँचा, तब उसने विलंब का अपमान करके वापस भेजा।

यह बात मालूम होने पर दुर्जय आग-बबूला हो उठा। दुर्जय ने सोचा कि राजकुमारी के साथ शादी करके राजा बनने का मौक़ा उसके पुत्र के लिए हाथ से निकलता जा रहा है। इसलिए करालध्वज के पास यह समाचार क्यों न भेजे कि अगली दीपावली को आपके पास उपहार के रूप में जो कन्यायें भेजी जा रही हैं, उनमें राजकुमारी भी हो, आप यह मांग

करे। लेकिन ऐसा करने पर राजकुमारी करालध्वज के हाथ में पड़ जायगी। इसके बदले कोई तंत्र करके उसे कभी न कभी अपनी बहू बना ले तो क्या ही अच्छा होगा!

सोचते-सोचते दुर्जय के मन में एक उपाय सूझा। दुर्जय मनुष्य को साँप बनाने की एक क्षुद्र विद्या जानता था। वाणी को साँप बनाकर कुछ समय तक उसे उसी रूप में रहने दिया जाय और बाद उसे मनुष्य के रूप में बदल दे तो शायद वह उसकी आज्ञा का पालन कर सके। साँप के रूप में परिवर्तित मनुष्य को फिर से मानव बनाना है तो उस साँप को चूमना होगा। अगर यह काम विलंब ही कर बैठे तो वाणी अवश्य उसके साथ विवाह करेगी।

यह चाल दुर्जय को बड़ी अच्छी मालूम हुई। उसने एक रात को राजकुमारी को साँप में बदल दिया। सुबह उठकर सबने देखा, राजकुमारी के पलंग पर साँप सो रहा है। राजकुमारी का कहीं पता नहीं है।

साँप को देख दासियाँ चिल्ला पड़ीं। राजा और रानी दौड़े आये। सबको मालूम हो गया कि वाणी साँप बन गयी है। राजा ने मंत्री को बुला भेजा।

मंत्री को देखते ही बिस्तर से उठकर फन फैलाये साँप फुत्कारने लगा ।

दुर्जय का कलेजा कांप उठा । क्यों कि वाणी मामूली साँप बनने के बदले विषसर्प बन बैठी है । तीव्र स्वभाववाले व्यक्तियों को साँप के रूप में बदलने से वे विषसर्प बन जाते हैं । यह बात दुर्जय नहीं जानता था । इस साँप को उसका पुत्र कैसे चूमेगा ? वह डसकर मार न डालेगा ?

"महाराज, यह विषसर्प है ! इसे तुरंत मार डालिये ।" दुर्जय ने कहा ।

"चाहे यह भले ही विषसर्प क्यों न हो, मेरी बेटी है । मैं इसे कैसे मार सकता हूँ ? दुर्भाग्य से मेरी बेटी साँप बन गयी है । फिर भाग्य जमा तो वह मानवी बन जायगी । मुझे यही संतोष है कि वह किसी न किसी रूप में अपनी ज़िंदगी जीवे !" राजा ने कहा ।

साँप पलंग पर से उतरकर कहीं चला गया । इसके बाद वह राजमहल में कभी दिखाई न दिया ।

बंशीलाल के सामने भी राजा की समस्या उत्पन्न हुई । उसने गायें सब बेचकर बकरियाँ खरीद लीं और 'गायों के कर' से तो वह मुक्त हो गया । लेकिन उसके वाणी की उम्र की एक लड़की थी । वह भी बड़ी सुंदर थी । एक साल पहले राजकर्मचारी गायों का कर वसूल करने बंशीलाल के घर आया और घर के आंगन में खड़ी गौतमी को देख पूछा था—"इस लड़की की उम्र क्या है ?"

इसलिए अगले साल करालध्वज के उपहार के लिए राजकर्मचारी गौतमी को ज़रूर पकड़ ले जायेंगे । इस बात की कल्पना मात्र से बंशीलाल क्रोध से काँप उठा । उसने अपने पुत्र सुनंद को बुलाकर कहा—"बेटा, कोई ऐसा उपाय ढूंढ़ो जिस

से तुम्हारी बहन कराल का उपहार न बन सके ।"

सुनंद बड़ा साहसी था । उसने अपनी उम्र के कई साहसी युवकों को इकट्ठाकर एक छोटी सेना तैयार की । उन सबसे कहा–"हम सब एक अंधेरी रात में कराल के राजमहल पर हमला करेंगे । वहाँ के पहरेदारों से लड़ेंगे । हम सब शपथ करें कि करालध्वज को मारे बिना प्राणों से वापस न लौटेंगे ।"

सुनंद की बात सब युवकों ने मान ली । एक ने भी यह आशा न की कि वे प्राणों से वापस लौटेंगे । रात के समय सुनंद की सेना सीमा पारकर आधी रात के क़रीब कराल के राजमहल में पहुँची । पहरेदार बड़ी आसानी से हार मान बैठे । वे बड़े लापरवाह थे । कुछ लोग उनमें बन्दी हुए तो बाक़ी लोग भाग खड़े हुए । सुनंद के दल में एक भी न मरा । सब कराल के शयन गृह के पास पहुँचे ।

ठीक उसी समय कराल के शयनगृह से एक भयंकर चिल्लाहट सुनायी दी । कुछ ही क्षणों में कराल दर्वाज़ा खोल बाहर आया । फेन उगलते सुनंद के पैरों के सामने गिर पड़ा । थोड़ी देर तक छटपटाते दम तोड़ बैठा ।

उसी समय एक विष सर्प कराल के शयनगृह से रेंगते बाहर आया। सुनंद ने उसे देखा। सारी बात उसकी समझ में आ गयी। उसी सांप ने कराल को डस कर मार डाला था।

सुनंद सांपों को पकड़ने की हुनर जानता था। उसने झट झुककर सांप का सर पकड़ लिया और कृतज्ञता भरे भाव से उसे चूम लिया।

दूसरे ही क्षण सांप गायब हुआ और सुनंद के सामने एक राजकुमारी प्रत्यक्ष हुई। सुनंद एकदम चकित रह गया।

"मैं सब कुछ बता दूंगी। हमारा यहाँ रहना खतरे से खाली नहीं। पहले हम इस राज्य को पारकर हमारे राज्य की सीमा में पहुँच जायेंगे।" राजकुमारी वाणी ने कहा।

सब बंशीलाल के घर पहुँचे। राजकुमारी ने सुनंद को सारा वृत्तांत सुनाया और कहा–"आगे हमें और काम करने हैं। इस राज्य में सच्चे बीर तुम ही एक दिखाई देते हो! तुमने मुझे मानवी बनाया, इसलिए मैं अवश्य तुम्हारे साथ विवाह करूँगी। मगर हमारे देश में दो और दुष्ट हैं। एक मेरे पिता भाग्यसिंह और दूसरे मंत्री दुर्जय हैं। इन दोनों को हटाने पर ही हमारा राज्य सुखी रहेगा। चलो, तुम अपनी सेना को लेकर तुरंत रवाना हो जाओ।"

भाग्यसिंह ने गद्दी को छोड़ने के लिए खुशी से मान लिया, पर दुर्जय भाग गया। बहुत ढूंढ़ने पर भी उसका पता न चला। लोग कहा करते थे कि वह चमगादड़ बनकर अंधेरे में कहीं उड़ गया है!

सुनंद ने वाणी से विवाह किया। राज्याभिषेक के बाद बड़ी दक्षता से शासन करने लगा। प्रजा उसके राज्य में सुखी थी।

विदुर के चले जाने पर दुर्योधन ने अपने पिता के पास पहुँचकर कहा– "पिताजी, विदुर सदा आपके साथ रहते हैं; इसलिए मैं अपने मन की बात आपके सामने रख नहीं पा रहा हूँ। वे हमेशा मेरे शत्रु पांडवों की प्रशंसा करते नहीं थकते। आप उनकी हाँ में हाँ मिलाते हैं। हमें तो अपने शत्रुओं का नाश करना है। इसलिए कोई उपाय सोचना चाहिये।"

इस पर धृतराष्ट्र ने कहा–"तुम्हारा और मेरा उद्देश्य भिन्न कैसे हो सकता है, बेटा? विदुर जब पांडवों की प्रशंसा कर रहा था तब मैं उसका विरोध न कर सका, इसलिए मौन रह गया। इसका मतलब कुछ और नहीं है। तुमने और कर्ण ने कोई निर्णय कर लिया हो, तो जल्द बता दो। मैं भी तो सुनूँ!"

"पांडव द्रुपद के दामाद बनकर और शक्तिशाली बन गये। द्रुपद धन, पौरुष और बल भी रखता है। हमें कोई ऐसा उपाय सोचना चाहिये, जिससे पांडवों को द्रुपद का सहारा न मिल सके। कुशल तांत्रिकों की मदद से पांडव और द्रुपद के बीच वैमनस्य पैदा करना चाहिये। पांडवों को पांचाल से भगा देने का प्रयत्न करना होगा।" दुर्योधन ने समझाया।

दुर्योधन ने एक और उपाय सोचा था। वह यह कि द्रौपदी के पाँच पति हैं। इसलिए उसके और पांडवों के बीच वैमनस्य पैदा करनेवाली कुटिल परि-

१६. पांडवों को राज्य की प्राप्ति

चारिकाओं से मदद लेनी है। अगर हम इस चाल में सफल निकले तो पांडव हस्तिनापुर लौटने की सोचेंगे।

"पांडवों में सब से बड़ा पराक्रमी भीम है। उसे गुप्त रूप से मार डालेंगे। भीम और अर्जुन दोनों मिले रहेंगे तो अग्नि को वायु का साथ देने के बराबर होगा। अगर भीम मर गया तो अर्जुन हमारे कर्ण के सामने ठहर न सकेगा! समझिये, चारों पांडव हमारे गुलाम ही हैं। हम कोई चाल चलकर उन्हें यहाँ पर बुलवा लेंगे और अपने अधीन में रख लेंगे।" दुर्योधन ने युक्ति बतायी।

कर्ण ने दुर्योधन की बातें सुनकर कहा– "तुम जो उपाय बताते हो, वे चलने के नहीं हैं। इन से पांडवों की कोई हानि न होगी। महा पराक्रमी दामादों को द्रुपद घूस के लोभ में पड़कर खो बैठेंगे? पांडव जब कंगालों की दशा में थे, तभी द्रौपदी ने उन्हें बर लिया है। अब वे अच्छी हालत में हैं, वह उन्हें कैसे त्याग सकती है? अलावा इसके पांडव उसे प्राणों से अधिक प्यार देते हैं। इसलिए तुम्हारी यह चाल नहीं चलने की। और रही, भीम को गुप्त रूप से मार डालने की बात! इसके पहले हम कई प्रयत्न करके असफल रह गये। क्या यह सोचते हो कि गुप्तचरों के यह कहने से कि हस्तिनापुर की हालत बड़ी ख़राब है, तो पांडव उस पर विश्वास करनेवाले बुद्धू हैं? साम, दाम व भेदोपायों से हम पांडवों का कुछ बिगाड़ नहीं सकते। और इस समय हमारे लिए केवल दण्डोपाय बच रहा है! उनसे बढ़कर इस वक़्त हमारे पास बड़ी सेना है! यादव, चैद्य, मागध इत्यादि उनकी मदद करने निकलने के पूर्व ही हमें पांडवों पर हमला करके उनका सर्वनाश करना होगा। इसमें अधर्म की भी कोई बात नहीं है।"

इस पर धृतराष्ट्र ने कहा–"कर्ण का कहना सर्वथा उचित है। भीष्म, विदुर और द्रोण के विचार भी हम जान लेंगे।"

भीष्म, द्रोण और विदुर के पास बुलावा गया। उन सबने आकर धृतराष्ट्र के मुँह से सारी बातें सुनीं।

भीष्म ने अपना विचार यों बताया :

"मेरी दृष्टि में पांडव तथा दुर्योधन आदि समान हैं। पितामहों के जमाने से आनेवाले इस राज्य के आधे भाग के वे अधिकारी हैं। इसलिए उन्हें बुलवाकर आधा राज्य दे देना न्याय संगत है। ऐसा न करेंगे तो आप लोग बदनाम हो जायेंगे। दुर्योधन, तुमने अब तक पांडवों के प्रति काफी अन्याय किये हैं। मगर उनकी हानि नहीं कर सके। लाख के घर में पुरोचन मात्र जलकर मर गया। क्या इस बात पर कोई यक़ीन भी करेगा कि पुरोचन ने ही लाख के घर में आग जलायी और वह भी खुद जल मरा? यह समाचार सुनने के बाद कि कुंती और पांडव लाख के घर में मर गये हैं, मुझे किसी का भी चेहरा देखने में घृणा होती है! वे जीवित हैं, इसलिए तुम्हारी इज्ज़त बच रही! कम से कम

आज से ही सही, अच्छा यश प्राप्त कर सुख से रहो!"

"भीष्म का कहना सत्य है। मेरी भी यही राय है! पांडवों को बुलाकर उन्हें आधा राज्य देना ज़रूरी है। इसलिए द्रुपद, उनके पुत्र, कुंतीदेवी, पांडव तथा द्रौपदी को सुंदर वस्त्र-आभूषण उपहार में भिजवा दीजिये। उन उपहारों को लेकर दुश्शासन या विकर्ण का कांपिल्य नगर में जाना उचित होगा। उन्हें पांडवों के साथ प्रेम पूर्ण व्यवहार करना होगा। वहाँ पर कुछ दिन बिताकर सद्‌भावपूर्वक हस्तिनापुर के लिए उन्हें निमंत्रण देना

होगा। द्रुपद को भी मनवाकर पांडवों को साथ लिवा लाना होगा।" द्रोण ने यों समझाया :

इस पर कर्ण ने दखल देते हुए धृतराष्ट्र से कहा–"राजन, ये दोनों वृद्ध सदा शत्रुओं की प्रशंसा करते आपकी उन्नति में बाधा डालते हैं। इनकी बातों पर ध्यान न दीजिये।"

इस पर द्रोण ने क्रुद्ध होकर कहा– "तुम पांडवों से ईर्ष्या करते हो, इसलिए हम पर दोषारोपण करते हो! फिलहाल शायद हम से अधिक तुम कौरवों की भलाई चाहते हो न? चाहे जो भी हो, हमारी सलाह के अनुसार न चले तो अकारण ही कौरवों का अहित होगा।"

इस पर विदुर ने समझाया–"राजन, हम हितवचन कहनेवाले मात्र हैं, लेकिन आप से कोई काम नहीं करा सकते! भीष्म और द्रोण ने हित की ही बातें बतायी हैं। मगर कर्ण उसे हित नहीं मानता है। चाहे जो भी कुछ कहे, यह सत्य है कि भीष्म और द्रोण से बढ़कर आपका हित चाहनेवाले दूसरे कोई नहीं हैं। यह कल्पना भी नहीं कर सकते कि इनके जरिये आपकी हानि होगी। ये पक्षपात करनेवाले भी नहीं हैं। आप अपने पुत्रों के प्रति पक्षपात करते हैं, इसलिए ये लोग आपको गुमराह बना रहे हैं। इनकी बातें सुनेंगे तो आपके वंश के लिए खतरा पैदा होगा! ऐसा दुस्साहस करना वंश का विनाश मोल लेने के बराबर है। पांडवों को जीतना आसान नहीं है। उन्हें कृष्ण का सहारा प्राप्त है। द्रुपद भी उनके साथ है। भीम और अर्जुन असाधारण पराक्रमी हैं। प्रेम से ही उन पर विजय पाया जा सकता है, दण्ड से नहीं। अलावा इसके हस्तिनापुर की प्रजा पांडवों को देखने के लिए व्याकुल है। इसलिए

उन्हें बुलवाकर सबको आनंदित कराना श्रेयस्कर है।"

सब की सलाह सुनकर धृतराष्ट्र एक निर्णय पर पहुँचा, तब बोला-"भीष्म, द्रोण तथा तुमने भी जो कुछ बताया, वही ठीक है। मेरी दृष्टि में पांडव और कौरव भिन्न नहीं हैं। विदुर, तुम शीघ्र जाकर पांडवों, उनकी माता, उनकी पत्नी कृष्णा को यहाँ लिवा लाओ। भाग्य से वे लोग जलने से बच गये। द्रुपद की पुत्री का उनकी पत्नी होना और भी भाग्य की बात कही जा सकती है। इसलिए मेरी सारी चिंताएँ दूर हो गयीं।"

अनेक रत्नाभूषण, सुंदर वस्त्र तथा अन्य उपहार लेकर विदुर कांपिल्य नगर पहुँचा। द्रुपद, धृष्टद्युम्न, कृष्ण, पांडव इत्यादि से मिलकर उनके कुशल समाचार पूछे, कौरवों का कुशल समाचार सुनाया। सबको उचित उपहार दिये।

इसके अनंतर सभाभवन में विदुर ने द्रुपद के दर्शन किये और कहा-"महाराज, आपके साथ पांडवों का रिश्ता देख धृतराष्ट्र और भीष्म बहुत ही आनंदित हुए हैं। उन लोगों ने आपका कुशल-समाचार जानने के लिए मुझे भेजा है। आपके मित्र द्रोण ने उनकी तरफ़ से आपका आलिंगन करने को बताया है। आपकी पुत्री पांडवों की पत्नी बनी। यह पांडवों के लिए राज्य-प्राप्ति से अधिक प्रसन्नता की बात है। पांडवों ने बहुत समय पहले हस्तिनापुर को छोड़ दिया था। कौरव उन्हें देखने को आतुर हैं। अंतःपुर की स्त्रियाँ द्रौपदी को देखने को ललचा रही हैं। धृतराष्ट्र ने मुझे आदेश दिया है कि आपकी अनुमति लेकर पांडव, कुंती और द्रौपदी को हस्तिनापुर ले जाऊँ! इसलिए कृपया आप अनुमति दे दीजिये।"

विदुर की बातें सुनकर द्रुपद ने कहा-कौरवों के साथ रिश्ता होने से मैं बहुत

ही प्रसन्न हूँ। धृतराष्ट्र जैसे राजा का आदेश देना और आप जैसे महानुभाव जो दूरदृष्टि रखते हैं, यहाँ पर आना हमारे लिए गौरव की बात है। हम इनकार ही कैसे कर सकते हैं? लेकिन हमें बलराम और कृष्ण के विचार भी जान लेना ज़रूरी है। क्योंकि वे सदा पांडवों के हितचिंतक हैं। पांडव भी बुद्धिमान, धर्मपरायण और बलवान हैं। उनका भी विचार हमें जान लेना है।"

द्रुपद की बातें पूरी भी न हो पायी थीं कि युधिष्ठिर ने कहा–"राजन, हम लोग आपके अधीन में हैं। आप सोच-समझकर हमारे कर्तव्य के संबन्ध में जैसा निर्णय करेंगे, हम वैसा चलेंगे।"

कृष्ण ने सभासदों से कहा–"मुझे लगता है कि विदुर की इच्छा के अनुसार पांडवों को उनके साथ हस्तिनापुर भेजना उचित होगा। लेकिन हमें यह भी जान लेना है कि सब तरह से पांडवों का हित चाहनेवाले द्रुपद का क्या विचार है?"

इस पर द्रुपद ने कहा–"पांडव आज मेरे निकट व्यक्ति बन गये हैं, पर बचपन से ही वे लोग कृष्ण के आप्त बन्धु हैं। दूर पर रहते हुए भी वे सदा इनका हित चाहते हैं। इसलिए उनका विचार ही मेरा विचार है।"

द्रुपद की अनुमति मिल गयी। पांडव, द्रौपदी तथा कुंतीदेवी को साथ ले विदुर के साथ हस्तिनापुर के लिए चल पड़े। कृष्ण और बलराम भी उनके पीछे चले। विदुर के दूत ने पहले ही जाकर धृतराष्ट्र को पांडवों के आगमन का समाचार दिया। धृतराष्ट्र ने प्रसन्न होकर पांडवों की अगवानी करने विकर्ण, चित्रसेन, द्रोणाचार्य तथा कृपाचार्य को भेजा।

उनके पीछे पांडव हस्तिनापुर में पहुँचे। सारा नगर सजाया गया था। पांडवों को
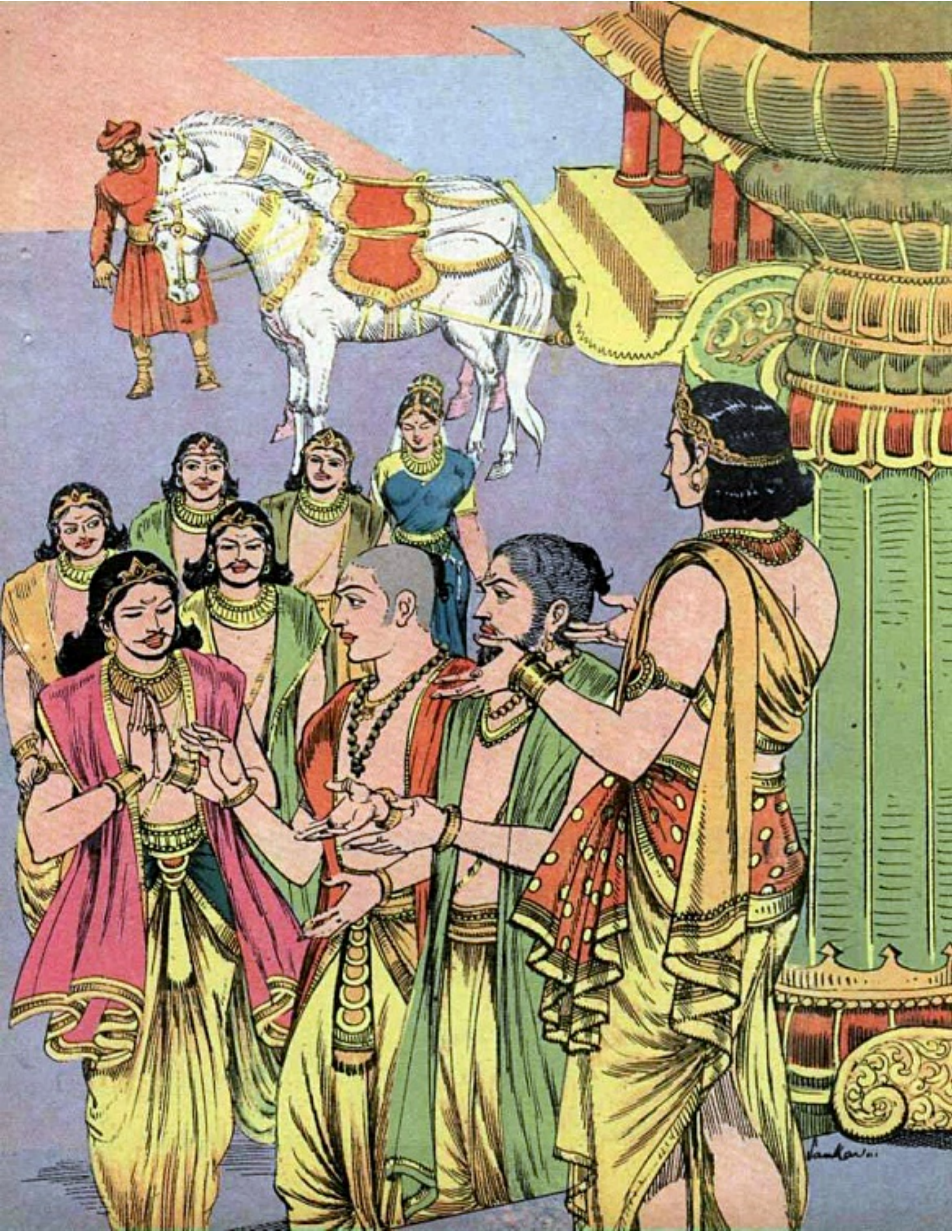
देख सारी प्रजा प्रसन्न हो उठी। जनता के आशीर्वाद स्वीकार करते पांडव राजमहल में पहुँचे। धृतराष्ट्र, भीष्म आदि को प्रणाम किया।

कुछ दिन बीतने पर धृतराष्ट्र ने पांडव तथा कृष्ण को बुलाकर कहा–"बेटे, तुम्हारे और कौरवों के बीच शत्रुता को रोकने के लिए इस राज्य का आधा भाग मैं तुमको अभी देता हूँ। इसलिए आज से तुम लोग खांडवप्रस्थ को अपना स्थिर निवास बनाकर अपने राज्य के हिस्से पर शासन कीजिये।"

युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्र का आदेश मान लिया। सब बुजुर्गों को प्रणाम कर अपने छोटे भाई, माता, द्रौपदी, बलराम और श्रीकृष्ण को साथ लेकर खांडवप्रस्थ जा पहुँचे। खांडवप्रस्थ भयंकर जंगल था। यह बात जानकर कृष्ण ने इन्द्र का स्मरण किया। कृष्ण का उद्देश्य जानकर इन्द्र ने विश्वकर्म को वहाँ पर भेजा।

विश्वकर्म ने एक अच्छे प्रदेश का चुनाव कर वहाँ पर एक सुंदर नगर का निर्माण किया। नगर के चारों तरफ़ ऊँचे प्राकार बनाये, प्राकारों के बाहर गहरी खाई बनायी। नगर के बीच सफ़ेद रंग के चमकनेवाले महल, गरुडाकार के नगरद्वार, विशाल राजपथ, राजसभा, मंदिर, जहाँ-तहाँ सुंदर उद्यानवन भी निर्मित किये। उसका नामकरण इन्द्रप्रस्थ पड़ा। नगर के मध्य भाग में एक विशाल प्रदेश में पांडवों के निवास के लिए सुंदर महल भी निर्मित थे। चारों वर्णों के लोग, शिल्पी, विविध कलाओं के कलाकार आकर इंद्रप्रस्थ में बस गये।

युधिष्ठिर अपनी पत्नी व भाइयों के साथ सुख के साथ दिन काटते राज्य-शासन करने लगे। कुछ दिन बीतने के बाद कृष्ण पांडवों से विदा लेकर द्वारका को लौट गये।
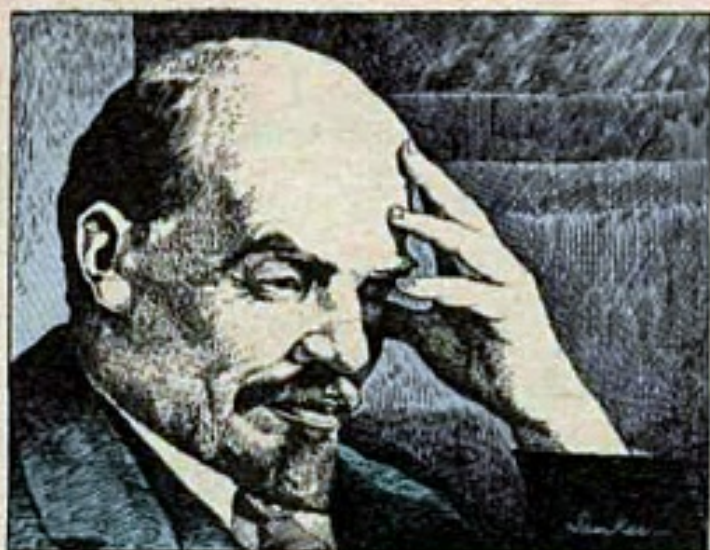
लेनिन की कहानी

[३]

बचपन में ही लेनिन को तक़लीफ़ों का सामना करना पड़ा। १८८६ जनवरी में उसका पिता अपनी ५४ वर्ष की अवस्था में आचानक स्वर्गवासी हुआ। इसके एक साल बाद १८८७ मार्च में लेनिन का भाई अलेक्ज़ांडर (साष) सेंट पीटर्स बर्ग में गिरफ़्तार हुआ। जार राजा की हत्या के लिए जो षड्यंत्र हुआ, उसमें वह भी एक था। आलेक्ज़ांडर की गिरफ़्तारी के थोड़े दिन बाद उसकी बड़ी बहन आन्ना भी गिरफ़्तार हुई।

अलेक्ज़ांडर एक वीर था। अदालत में उसने अपने पक्ष में स्वयं पैरवी की। उसने कहा–"जार के शासन का पतन होना संभव ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी है।" मई महीने में चार अन्य क्रांतिकारियों के साथ स्किस्सेलबर्ग के दुर्ग में अलेक्ज़ांडर को फांसी दी गयी। उस वक़्त उसकी उम्र २१ साल की थी।

अपने बड़े भाई की मृत्यु ने लेनिन पर गहरा आघात पहुँचाया। वह प्रत्येक विषय में अपने बड़े भाई को आदर्श बनाकर चलता था। लेकिन लेनिन ने निर्णय किया कि जार के शासन का सामना करना है तो जार अथवा उसके अधिकारियों का समूल नाश करना सही मार्ग नहीं है।

ऐसी दुखद स्थिति में भी लेनिन ने अपनी माध्यमिक (हाईस्कूल) शिक्षा सफलतापूर्वक समाप्त की। अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होकर स्वर्ण पदक भी प्राप्त कर लिया।

१८८७ की गरमी के दिनों में लेनिन का परिवार सिंबीर्स्क को छोड़ कजान में चला गया।

लेनिन वहाँ पर कालेज में दाखिल हुआ। उसने न्यायशास्त्र को चुना। यहीं पर लेनिन क्रांतिकारी विद्यार्थियों के संपर्क में आया।

१८८७ दिसंबर में विद्यार्थियों ने विद्रोह किया। इस संदर्भ में विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने लेनिन का बहिष्कार किया। इसके बाद पुलिस ने उसे गिरफ़्तार किया। लेनिन को कजान राज्य के कोकुष्किनो नामक गाँव में प्रवास में भेजा और उस पर निगरानी रखी।

एक वर्ष तक लेनिन प्रवास में रहा। यह समय लेनिन ने पुस्तक-पठन में बिताया। एक साल बाद उसे कजान राज्य में पुनः प्रवेश करने दिया, लेकिन विश्वविद्यालय में प्रवेश नहीं दिया।

उन्हीं दिनों में लेनिन ने मार्क्स के ग्रन्थों का अच्छा अध्ययन किया और मार्क्सिस्ट तथा कम्यूनिस्ट के रूप में उसने अपनी अच्छी नींव डाली।

कुछ समय बाद लेनिन का परिवार कजान से समारा में चला गया। १८९१ में लेनिन ने सेंटपीटर्स बर्ग के विश्वविद्यालय की परीक्षा प्राईवेट से दी और प्रथमश्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। इसके बाद लेनिन ने क्रांतिकारी कार्यों में बड़ी चुस्ती से भाग लिया और कम्यूनिस्ट मानिफेस्टो का जर्मन से रूसी भाषा में अनुवाद किया।

नियंतृत्व शासन के विरुद्ध विद्रोह करना चाहे तो लेनिन की दृष्टि में समारा अनुकूल कार्यक्षेत्र प्रतीत न हुआ। इसलिए वह १८९३ में जार सम्राटों की राजधानी सेंटपीटर्स बर्ग जा पहुँचा।

राजधानी में लेनिन ने जो चार-पाँच वर्ष (१८९३-९७) बिताये, वे अत्यंत महत्व रखते हैं। वहाँ पर उसने मजदूरों का संघटन करने तथा कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थापना करने की बड़ी कोशिश की।

१८९४ के प्रारंभ में नदेज्द क्रूपस्कया नामक युवती से लेनिन का परिचय हुआ। वह इतवार के दिनों में रात्रि पाठशालाओं में प्रौढ़ लोगों को पढ़ाती थी। वह मार्क्सिस्ट-वृन्द में शामिल हुई। अतः लेनिन के साथ उसकी घनिष्टता बढ़ी। वे दोनों विवाह करके वैवाहिक जीवन तथा क्रांतिकारी जीवन के समभागी बन गये।

लेनिन ने अनेक प्रकार के गलत वादों की आलोचना करते कई क़िताबें लिखीं। प्रगतिशील व्यक्तियों ने ही यह प्रचार किया था कि रूस में पूंजीवाद की उन्नति का विरोध करते शासन का धिक्कार नहीं करना चाहिए। पर लेनिन ने यह सिद्धांतीकरण किया कि नियंतृत्व शासन, ज़मीन्दार तथा 'बूर्जुवा' लोगों का सामना करने के लिए कृषक तथा मजदूर वर्गों के बीच मैत्री स्थापित होनी चाहिए। वे ही सच्चे अर्थों में समाज का निर्माण कर सकते हैं।

निश्चित सिद्धांतों का प्रतिपादन कर गलत सिद्धांतों का खण्डन करते लेनिन ने अनेक पुस्तकें लिखीं और वह सेंटपीटर्स बर्ग के मार्क्सवादियों का नेता बना।
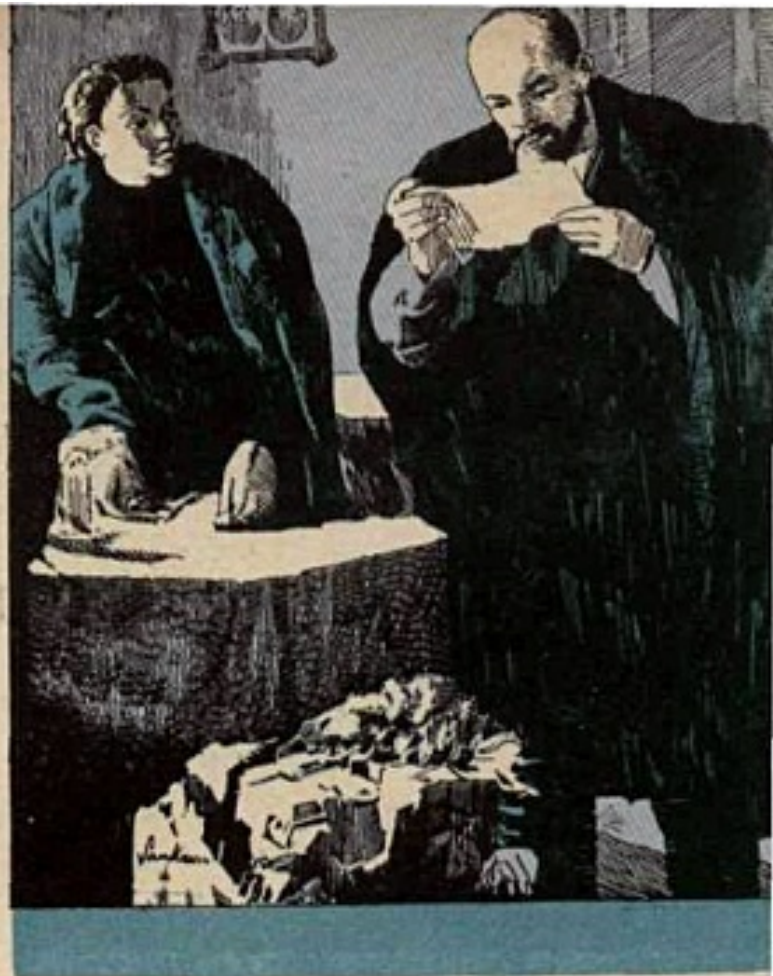
१८९५ के वसंतकाल में लेनिन ने स्विजलॅण्ड, फ्रान्स, तथा जर्मनी का पर्यटन किया और वहाँ के मजदूर नेता तथा क्रांतिकारियों के साथ संपर्क स्थापित किया। उसी वर्ष हेमंत में वह रूस लौट आया और राजधानी के मार्क्सवादी वृन्दों का एक संघ बनाकर कृषकवर्ग की विमुक्ति के आन्दोलन की एक समिति स्थापित की। मास्को, ईयिव जैसे कुछ अन्य नगरों में भी ऐसी संस्थाएँ तथा यूनियन स्थापित हुए।

इस आन्दोलन के निमित्त "रबोचिथ द्वेल" (मजदूरों का कर्तव्य) नामक एक पत्रिका प्रकाशित करने का भी निर्णय

हुआ। लेकिन इस पत्रिका का प्रथम अंक प्रकाशित होते समय पुलिस ने कार्यालय पर धावा बोलकर लेनिन और उसके साथियों को गिरफ़्तार कर जेल भेजा।

मगर इस प्रकार के अवरोधों को देख लेनिन निराश होनेवाला व्यक्ति न था। जेल में रहते ही उसने विमुक्ति-आन्दोलन-समिति का संचालन किया। समिति के वास्ते करपत्र तथा सूचना-पत्र निकाले। वे सब बाहर गुप्तरूप से प्रकाशित होते थे। लेनिन उस समय १४ महीने तक जेल में था।

इन्हीं दिनों में लेनिन ने "रूस में पूंजीवादी विधान की वृद्धि" नामक अति महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखना प्रारंभ किया।

१८९७ के प्रारंभ में लेनिन को पूर्वी साइबीरिया में तीन वर्ष तक प्रवास की सज़ा मिली। उसे षुपेनस्काय नामक गाँव में भेजा गया। वह रेल मार्ग से लगभग ४०० मील दूर बसा एक गाँव था। लेनिन के साइबीरिया में पहुँचने के एक वर्ष बाद क्रूपस्कया भी विमुक्ति आन्दोलन समिति के कार्यकलापों के सिलसिले में गिरफ़्तार हुई। सरकार ने उसको लेनिन के पास जाने की अनुमति दी। उनका विवाह साइबीरिया में ही हुआ।

साइबीरिया में प्रवास में रहते लेनिन ने पार्टी के कार्यक्रम का मसविदा तैयार किया। तीस से अधिक पुस्तकें भी लिखीं।

२९ जनवरी १९०० को लेनिन के प्रवास की समाप्ति हुई। वह पुनः अपने नगर को लौट आया। मगर उसको सरकार ने मास्को में, राजधानी या किसी अन्य प्रमुख औद्योगिक नगरों में स्थिर निवास बनाने की अनुमति न दी। इसलिए उसने सेंटपीटर्स बर्ग के निकट रहने के ख्याल से "त्सोव" नामक ग्राम में अपना निवास बना लिया।

१०३. प्राचीन मूर्ति

टर्की के दक्षिण-पश्चिम में स्थित कोन टापू में आस्क्लिपियोस नामक मंदिर था। यह औषध देवता का मंदिर था। आज उजड़ गया है। उस उजड़े प्रदेश में एक किसान खेत जोत रहा था, तब यह प्राचीन शिल्प बाहर निकल आया। अनुमान लगाया गया है कि यह १८०० वर्ष पूर्व का है। कुछ लोगों का विश्वास है कि यह मूर्ति सुप्रसिद्ध ग्रीक "धन्वन्तरी" हिपोक्रटीस की है। उसका जन्म इसी टापू में हुआ था।